आदमी तो सब जगह हैं

बिमला रावर सक्सेना

प्रकाशक

अनुराधा प्रकाशन

ISBN No.: 978-93-85083-32-7

मूल्य : 250 रु.
प्रथम संस्करण : 2016
कॉपीराइट : रचनाकार
रचनाकार : बिमला रावर सक्सेना
प्रकाशक : अनुराधा प्रकाशन
1193, पंखा रोड, नांगल राया
निकट डी2ए जनकपुरी,
नई दिल्ली-110046
दूरभाष : 011-28520555
चलभाष : 9213135921
ईमेल : anuradhaprakashan@gmail.com
वेबसाइट : www.anuradhaprakashan.com

ADMI TO SAB JAGAH HAIN
by BIMLA RAWAR SAXENA

प्रकाशकीय

चर्चित कवयित्री **बिमला रावर सक्सेना** की कृति **'आदमी तो सब जगह है'** की कविताएं अपने कथ्य में समकालीन समय-समाज में व्याप्त विसंगतियों की ओर जहाँ संकेत करती हैं वहाँ सवाल भी उठाती हैं – 'क्या यही है आदमियत की परिभाषा?' एक सामान्य सी बात है कि जब से समाज की संरचना हुयी है और आदमी ने अपने को सभ्यता के दौर से गुजरते हुए संस्कृति की नींव रखी, तभी से उसकी एक पहचान कायम हुयी और पाशविकता से मनुष्यता का चरण आरम्भ हुआ। चूंकि संस्कृति ही किसी भूमि को पुण्य भूमि बनाती है इसलिए इसकी रक्षा सर्वोपरि है। उसके परिप्रेक्ष्य में यह कहना आवश्यक है कि यह आदमी को इन्सानियत का बोध भी कराती है किन्तु तब से अब तक का पूरा वैश्विक परिवेश विचित्रताओं और विभिन्नताओं से पूरित है।

'यह कैसा नगर है' / कोई किसी को जानता नहीं
शायद खुद को भी पहचानता नहीं

सामाजिक और आर्थिक विकास के इस युग में 'गरीबी की जिन्दगी' – पंक्ति पाठक मन को भीतर तक छू जाती है। आदमी-आदमी के बीच बढ़ रही है दूरियाँ, प्रेम-सौहार्द, आत्मीयता, भाईचारा - एक दिखावा छलावा मात्र बनकर रह गए हैं। कविता-पंक्तियाँ पेश है –

निर्धन की सूखी होली भी / साज़ों पर फाग सुनाती है
दीवाली के दीयों में / जलता है खून गरीबों का....

संग्रह की हर कविता अपने कथ्य-कथन में कसी होकर भी संवेदना का ऐसा सीन उभारती है कि टूटती हुयी जिन्दगी में विश्वास का बिखराव नजर आता है। यह बिखराव उस स्थिति का साक्ष्य कहा जा सकता है जहाँ स्त्री उन सभी रिश्तों के बीच शोषित, पीड़ित, उपेक्षित और दलित है।

'औरत की परिभाषा / बचपन में पिता की
जवानी में पति की / बुढ़ापे में संतान की गुलाम होती है'

कहने का तात्पर्य है, भले ही आदमी सब जगह अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है और अपने होने का दावा करता है, परन्तु जैसे शरीर आत्मा के बिना मृत है, वैसे ही आदमियत के अभाव में आदमी भी एक पुतला मात्र है क्योंकि 'मानवीय मूल्य' ही आदमियत की सर्वश्रेष्ठ परिभाषा कही जा सकती है। अस्तु समग्रता में यह कृति एक शाश्वत संदेश और वैचारिक बहस के लिए उर्वर प्लेटफार्म प्रस्तुत करती है। बधाई !

– मनमोहन शर्मा 'शरण'
प्रकाशक व सम्पादक

आमुख

जीवन के जीवन्त पलों को सहेज कर रखना किसे नहीं सुहाता। व्यतीत हो चुके पलछिन मात्र अतीत के ही अतिथि बन कर रह जायें तो उसका औचित्य भी समय के संग धूमिल होने लगता है पर जब यही भोगा हुआ काल खण्ड शब्द निधि का साहचर्य पा जाते हैं तब विगत अपने सम्पूर्ण धरोहर के साथ शाश्वत वर्तमान का दृश्य-परिदृश्य बन कर सदा के लिये अमिट-अमर बन जाता है।

'आदमी तो सब जगह हैं' के सूत्र में पिरोई गयी बिमला रावर सक्सेना की कवितायें उनकी ऐसी आप बीती का झरोखा है जिसमें भांति-भांति के रंग हैं, तरह-तरह के भाव हैं और भावनाओं का ज्वार अलग-अलग ऋतुओं की छाप की छत्रछाया में सहज प्रवाह में उदीयमान है। एक ऐसा अतीत जो वर्तमान को संजोये हुए भविष्य के रूप-स्वरूप को भी बिम्बित-प्रतिबिम्बित कर रहा है। शब्दों की संगत में संवेदना की वेदना मर्म का संसर्ग लिए जब अभिव्यक्ति के सोपान पर मुखरित होती हैं तब मौन भी स्वतः ही अपने प्रखर ओज में प्रगट होता है। कविता मूल रूप में अपने व्याकरण से तब ही सरोकार रख पाती है जब वह अपने आचरण में प्रवाह का नाद लिये होती है। जिस प्रकार नदी का नाद उसके सहज प्रवाह में निहित होता है उसी प्रकार काव्य की संहिता में भी आत्मिक गीत की गति का स्वाभाविक पुट रहता है। यह पुट सीमाबद्ध तो होता ही है साथ ही यह मुक्त और स्वच्छंद भी हो सकता है। अपने मुक्त रूप में काव्य तब और भी मनभावन लगने लगता है जब स्वच्छंदता के उन्मुक्त सौन्दर्य में शृंगार का संयमित प्रसाधन समाया हुआ हो। बिमला रावर की कवितायें मुक्त होकर भी संयमित हैं, मौन रह कर भी मुखर हैं तथा गूढ़ रह कर भी सरल हैं। सहज बोल-चाल की शैली में अनायास ही अव्यक्त को व्यक्त करने का जो कौशल कविता रूप में इस पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है उसे समझने-बूझने के लिए एक पाठक को उसी सरलता-सहजता की आवश्यकता पड़ती है जिसमें रच-बस कर इसे उकेरा गया है।

बिमला रावर सक्सेना ने अपने इस काव्य-संग्रह में स्वतः ही अपने को परिभाषित करते हुए जो उद्घोषणा की है उसे मैं यहाँ उद्धृत करना चाहूँगा– "मेरा सम्पूर्ण अस्तित्व / पिघल कर / मस्तिष्क और हृदय से / हाथों की उँगलियों तक / पहुँच जाता है / पोर पोर अक्षर बन जाती है / और कलम पकड़ कर / कागज़ पर बिखर जाती है / अगर यह सब कविता है / तो मैं भी कवि हूँ।" यह मात्र एक वक्तव्य नहीं है अपितु एक आत्म स्वीकृति है। वर्तमान समय में ऐसी स्वीकारोक्ति साहस का परिचायक तो है

ही साथ ही यह दम्भ का नहीं बल्कि विनम्रता का द्योतक भी है। बिमला रावर के काव्य संसार की थाह लेने की चाह उनकी इस आत्म स्वीकृति से और भी बलवती होती जाती है। आगे के पृष्ठों पर 'इच्छाओं के पंख' कविता में वो कहती हैं – "थाह पाना चाहती हूँ / रंग-बिरंगी मछलियों से / असंख्य जलचरों से / बतियाना चाहती हूँ / उन्हें अपने हाथों से सहलाना चाहती हूँ / ..... मैं घने जंगलों में / हिरणी सी भागना चाहती हूँ / मैं वनकन्या सी वृक्षों पर झूलना चाहती हूँ / अपनी इच्छाओं के पंखों के साथ / उड़ जाना चाहती हूँ / दूर, बहुत दूर, बहुत दूर।" कितने सहज और शाश्वत हैं यह भाव। क्या आपके हृदय में भावनाओं का ऐसा ही ज्वार उछाल नहीं मारता? क्या आपके मन में इच्छाओं के ऐसे भाव नहीं उपजते? क्या किसी बादल की भांति विचारों की ऐसी ही शृंखला आपके भीतर नहीं घुमड़ती? हाँ, जी हाँ, घुमड़ती है, उपजती है और उछाल भी मारती है। पर यह सब तो हमारे अन्दर, भीतर कहीं गहरे हृदय की तलहटी में उतर कर नितान्त एकाकी क्षणों में होता है फिर यह सब बिमला रावर सक्सेना की कविताओं में कैसे उद्घाटित हो गया? जी, आप का अनुमान सर्वथा सत्य है। हमारी आपकी गहन सोच को जो सहज ही अपनी अभिव्यक्ति में उकेर दे वही तो कवि है। हमारे मन का कवि।

वर्तमान से सरोकार और व्यवस्था की पृथक-पृथक अवस्था के प्रति सजग रहते हुए समाज में जागरूकता के साथ ही कर्तव्यबोध का ज्ञान सम्प्रेषित करना एक कवि का नैतिक दायित्व होता है। अपने इस दायित्व का निर्वहन करते हुए बिमला ने जैसे अभी-अभी घटित हुए घटनाक्रम को हमारे समक्ष परोस दिया है। "बहुत शोर, कुण्ठा, आक्रोश है / सबके दिल दिमाग में भयंकर रोष है / व्यवस्था गल सड़ गई है / अव्यवस्था बहुत बढ़ गई है / पूरा ढाँचा टूट रहा है / हर कोई इक दूजे को लूट रहा है / ..... व्यवस्था क्या है? / व्यवस्था तुम्हारी अपनी कृति / तुम्हारे व्यवहार, विचारों, क्रियाओं की अनुकृति / तुम्हारी अपनी रचना है / ... जिस दिन हम भूल जायेंगे / द्वेष, घृणा, असद् व्यवहार / जात-पात, ऊँच-नीच, भ्रष्टाचार / अपना लेंगे नैतिक विचार / व्यवस्था स्वयं बदल जायेगी / हर मानव स्वयं पर नियन्त्रण रखेगा / तो व्यवस्था स्वयं नियन्त्रित हो जायेगी।" किसी समस्या को लक्ष्य कर उसके प्रति समाज को सचेत करना कवि का दायित्व होता है और मात्र इतने ही कर्म को एक कवि के कर्तव्य की इतिश्री माना जा सकता है पर यदि अपनी कविता में एक कवि समस्या का सम्भावित समाधान भी सुझा दे तो यह समाज और मानवता के प्रति उसके गहन चिन्तन एवं चिन्ता को परिलक्षित करता है। एक कवि के वैचारिक उड़ान की यही उपलब्धि उसे सामान्य से विशिष्ट बना देती है। बिमला रावर अपनी कविताओं में विचारों की ऐसी ही अनेकानेक विशिष्टताओं को लेकर प्रभावी रूप से मुखर हुयी हैं। सम्वेदना का स्पन्दन लिये अनुभूतियों का स्पर्श है

इन कविताओं में तो प्रकृति के साहचर्य में सुरम्य सम्पदाओं की निधियाँ बिखरी पड़ी हैं साथ ही प्रेम-प्रीत से ओत-प्रोत आत्मिक छटा की मनोरम छवि लिये चित्त का बिम्ब है तो कहीं पीर की नीर से भरी व्यथा की कथा है तो दूसरी तरफ प्रसन्न मन का उत्सव जीवन के रंग-मंच पर प्रस्फुटित हुआ है। प्रतीक, उपमा एवं रूपक के सानिध्य में अलंकार का निरूपण इस प्रकार किया गया है मानो कविता के शृंगार में उसमें निहित सौन्दर्य ही सहज रूप से विभूषित हो उठा हो।

यह कविता संग्रह मात्र घटित-अघटित का लेखा-जोखा नहीं है अपितु चिन्तन, मनन और आत्म अवलोकन का एक विस्तृत व्योम भी है। स्त्री-पुरुष के मध्य, उनसे जुड़े तथा उनसे परे सम्बन्धों के ताने-बाने के साथ और उससे इतर जीवन के व्यवहारिक पक्षों का जो आकार-प्रकार इस संग्रह की विभिन्न कविताओं में अटा पड़ा है वह हमें झकझोरता है और बहुत कुछ सोचने-विचारने पर विवश भी करता है। 'औरत की परिभाषा', 'गोल-गोल रोटियाँ', 'बहुत देर रोई', 'क्या खोया पाया', 'उजली सहर', 'मत गाओ', 'अतीत के चेहरे', 'राम का राज', 'कितना सहूँ', 'एक समझौता', 'कुछ दर्द भरे सवाल', 'कोठरी काजल की', 'भटकते बादल' शीर्षक की कवितायें इसी श्रेणी की हैं।

बिमला रावर सक्सेना की यह पुस्तक 'आदमी तो सब जगह हैं' अपनी सार्थकता को जिस प्रभावी रूप से निरुपित करती है वह इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह वर्तमान के धरातल पर ही विगत और आगत के दृश्य-परिदृश्य को सफलतापूर्वक परिलक्षित करता है। देह, मस्तिष्क के साथ ही इसमें कवि के जिस आत्मिक श्रम का पुट समाया हुआ है वह एक 'आदमी' के 'इन्सान' बन जाने के क्रम-उपक्रम के पश्चात ही सम्भव होता है। बिमला रावर की इस विशिष्ट प्रस्तुति के लिए मैं उन्हें साधुवाद, बधाई या मंगल कामनाएं दे कर अपने कर्तव्य की इतिश्री नहीं कर सकता बल्कि इस बात के लिए मैं उनका आभार व्यक्त करना चाहूँगा कि चिन्तन-मनन की जो अलख उन्होंने अपने इस काव्य संग्रह से जगाई है वह स्वयं में अन्य और कवि-लेखकों का प्रेरणास्रोत बन कर उन्हें भी ऐसे ही सामाजिक-मानवीय सरोकार से भरे कर्तव्य पथ पर अग्रसर करने में सक्षम है।

मंगल कामनाएं!

डॉ. राजीव श्रीवास्तव
वरिष्ठ लेखक, कवि, समालोचक,
व्याख्याता एवं फिल्मकार
सम्पर्क : 9415323515, 7042970515
ईमेल - rajeevrsvp@yahoo.co.in,
rajeevrsvp@facebook.com

मेरी अपनी बात

पठन-पाठन और लेखन से मैं बहुत छोटी आयु से जुड़ी हुई हूँ। फिर बीच में एक बहुत लम्बा अन्तराल आ गया जिसमें मेरा लेखन सदैव मेरे साथ रहा किन्तु मेरी हृदय से निकली सारी वेदनाएं, संवेदनाएं काग़जों तक आकर अलमारी में छुपी बैठी रहीं। जीवन ने फिर करवट ली और उस लम्बे अन्तराल के बाद मैंने 'कादम्बिनी' पत्रिका में अपनी एक कविता "तो मैं भी कवि हूँ" भेजी, जो मार्च 2005 के कादम्बिनी अंक में प्रकाशित हुई। मैं कादम्बिनी के सम्पादकगण को हृदय से धन्यवाद करती हूँ क्योंकि उस कविता के प्रकाशन के बाद से मेरे जीवन ने फिर से करवट ली और मैंने दूसरी पारी प्रारम्भ की। वास्तव में जब मस्तिष्क उबलता है, हृदय मचलता है, जीवन के तूफान एक बारगी बाहर आ जाना चाहते हैं तब ढेर सी अनुभूतियाँ और अनुभव सम्पूर्ण अस्तित्व को पिघला कर हृदय और मस्तिष्क से हाथों की अँगुलियों तक पहुँच जाते हैं। पोर-पोर अक्षर बन कर, कलम पकड़ कर काग़ज पर बिखर जाती है।

मेरी कविता "तो मैं भी कवि हूँ" पर सबसे पहली प्रतिक्रिया प्राप्त हुई थी बीकानेर के सुप्रसिद्ध समाजसेवी, लेखक एवं "बीकानेर के गाँधी" नाम से प्रसिद्ध श्री किशोर गाँधी जी की। उनके पत्र ने बहुत प्रोत्साहन दिया, प्रेरणा दी और मुझे निरन्तर लेखन और प्रकाशन के लिए प्रेरित किया। मैं किशोर भैया की हृदय से आभारी हूँ।

कहते हैं प्रत्येक व्यक्ति के दिल में सदैव एक छोटा बच्चा छिपा बैठा रहता है "काश! कोई मुझको लौटा दे मेरे बचपन के प्यारे दिन। आज बुढ़ापा याद कर रहा जीवन के वो खोये पलछिन" कभी-कभी मनुष्य उड़ जाना चाहता है, अपनी इच्छाओं के पंखों के साथ दूर, बहुत दूर, बहुत दूर। समाज और देश के हालात देख कर कुण्ठा और आक्रोश से कह उठता है "व्यवस्था को बदल डालो। मौसम का रुख़ बदलता है, लेकिन फिर मौसम भी बदलेगा और नये मौसम आयेंगे। एक कवि को नगरों में बनते कंक्रीट के जंगल, शहरों का भागमभाग जीवन, खण्डहर बनते घर, जिन्हें उनके अपने छोड़ कर दूर चले गए, बिना दिल के शहर, स्वत्व को खोजती औरत, अपने बच्चों से मौन आँखों से पूछे जाने वाले बूढ़े माँ-बाप के प्रश्न, एक भूखे को चाँद में दिखती रोटियाँ, रिश्तों के संसार, रिश्तों की टूटती दीवारें सभी दर्द प्रभावित करते हैं। चट्टानों से सिर टकराती सागर की प्यासी लहरें। पेड़ों के पीले पत्तों और बूढ़े मानव जीवन का साम्य, क्योंकि

दोनों ही नई पीढ़ी के लिए अपना स्थान छोड़ देते हैं।

मेरे प्रस्तुत काव्य संग्रह में प्रकाशित कविता "चलते जाओ अकेले" गुरुवर रवीन्द्रनाथ टैगोर के गीत "एकला चलो रे" से प्रेरित है, इस गीत को हम बचपन से गाते रहे हैं और इससे प्रेरणा लेते रहे हैं।

मैंने जीवन की वास्तविकता को बहुत निकट से भोगा है और देखा है। दूसरों की पीड़ाओं, सामाजिक विसंगतियों, राजनैतिक कूटनीतियों को, धर्म के नाम पर चलते पाखण्ड, अन्याय, अत्याचार, सड़क पर होती दुर्घटनाओं, आतंकवाद, विश्वासघात सबको हृदय से महसूस किया है और वही सब मेरी कलम ने कह डाला। वास्तव में हमारे चारों ओर आदमी तो सब जगह हैं पर इन्सानियत हर जगह नहीं है, हर दिल में नहीं है। इन्हीं भावों को मैंने अपने काव्य संग्रह "आदमी तो सब जगह हैं" में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है क्योंकि आदमी होने के साथ इन्सान होना भी ज़रूरी है।

मैं मान्यवर डा. राजीव श्रीवास्तव जी की हृदय से आभारी हूँ कि उन्होंने मेरी पुस्तक का आमुख लिखना स्वीकार किया। डा. राजीव जी फिल्म पत्रकारिता, विशेषतः उच्च-स्तर के वृत्तिचित्र निर्माण, निर्देशन एवं लेखन आदि में कार्यरत हैं। अपने व्यस्त और अमूल्य समय में से उन्होंने जो समय मेरे कार्य में सहयोग देने के लिए दिया उसके लिए उनको अत्यधिक धन्यवाद। कविवर केदारनाथ 'शब्द मसीहा' एक लम्बे समय से एक छोटे भाई, मित्र, बन्धु की तरह मुझे सहयोग दे रहे हैं, मैं उनकी कृतज्ञ हूँ। सखी सुनीति कवांत्रा को उनके योगदान के लिए धन्यवाद। अपने प्रकाशक महोदय श्री मनमोहन शर्मा 'शरण' तथा उप-संपादक प्रिय प्रियंका को भी बहुत-बहुत धन्यवाद। अपने सुधि-सहृदय पाठकों को भी मेरा धन्यवाद।

बिमला रावर सक्सेना

अनुक्रम

1.	माँ भारती	11	27.	साम्य	42
2.	तो मैं भी कवि हूँ	12	28.	गोल-गोल रोटियाँ	43
3.	साकार स्वप्न	13	29.	क्यों भूल जाती हो	44
4.	जीवन के वो खोए पलछिन	14	30.	सड़क और आदमी	45
5.	इच्छाओं के पंख	16	31.	अन्दर की ताकत	46
6.	फर्नीचर पर फर्नीचर	18	32.	सौ फीसदी जीने के लिए	47
7.	व्यवस्था को बदल डालो	19	33.	रिश्तों का संसार	48
8.	जीवन और बाधायें	20	34.	वक़्त का क्या पता	49
9.	समाधिस्थ	21	35.	कैसी परीक्षा	50
10.	दृष्टि भ्रम	22	36.	आम आदमी	51
11.	बदलेगा मौसम	23	37.	बहुत देर रोई	52
12.	यह कैसा नगर है	24	38.	ये नज़ारे	53
13.	खण्डहर और घर	25	39.	यादों के जंगल में	54
14.	शुभ करें	27	40.	पृथ्वी पर स्वर्ग बना दो	56
15.	ग़रीबी की ज़िंदगी	28	41.	राज़ दिल के	57
16.	मौसम का रुख	29	42.	क्या खोया पाया	58
17.	मेरे घर की दीवारें	30	43.	अपनत्व का तार	59
18.	आस्तीन में साँप पल.....	31	44.	आराध्य	60
19.	बिना दिल का शहर	32	45.	छोटा सा हठ	61
20.	औरत की परिभाषा	33	46.	दिव्य ज्ञान	62
21.	समाज की सूरत	35	47.	हसरतें	63
22.	फासलों के फैसले	36	48.	सुनहरी सहर	64
23.	मौन चीत्कार	37	49.	गंगा	65
24.	प्यासी लहरें	39	50.	कहाँ से हैं मसीहा आते	66
25.	गले पर छुरा है	40	51.	भाषा और परिभाषा	67
26.	साहित्य समाज का दर्पण	41	52.	भावहीन पीड़ा	68

53. गुरु-चेला 69
54. एक नन्ही सी परी 70
55. उजली सहर 71
56. हाथों से छूटते दामन 72
57. एक आज 73
58. ऐ वतन 74
59. जीवन का उल्लास 75
60. मत गाओ 76
61. अहसासों का अहसास 77
62. आदमी तो सब जगह हैं 78
63. फूल खिलते हैं 79
64. अहं की लड़ाई 80
65. अतीत के चेहरे 81
66. टूटते स्वप्न 82
67. थोड़ा सा प्रकाश 84
68. राम का राज 85
69. बात इतनी थी नहीं 86
70. हँसी न छीनना 87
71. कुछ नए सपने 88
72. मेरा कानन 89
73. दृष्टि 91
74. वह निर्झर 92
75. अपने 93
76. रुक न जाना 94
77. कुहास 95
78. अभागा क्षण 96
79. कितना सहूँ 97
80. रंगमंच 99
81. कितना अकेला 100
82. शाही मेहमान 101
83. दर्द और मुस्कान 102
84. रूठे जिसके अपने 103
85. एक समझौता 104
86. मयूरा नाच 105
87. उसकी ज़िंदगी 106
88. चलते जाओ अकेले 107
89. समाज का चेहरा 108
90. एक नया मोड़ 109
91. सबसे बड़ा सच 110
92. मिल रहे धरती गगन 111
93. उनको तो मिटना है 112
94. कुछ दर्द भरे सवाल 113
95. आते कैसे-कैसे बादल 114
96. दोहे 115
97. देवताओं का ख़ज़ाना 116
98. खेवन हार 117
99. कोठरी काजल की 118
100. नाराज़गी 119
101. नई कहावतें 120
102. भटकते बादल 121
103. अवलम्बन 122
104. दीवाली के दो रूप 123
105. नवजीवन 124
106. उसने सीख लिया है 126
107. स्वर्ण ख़ज़ाना 127
108. सुगन्ध की लहरियाँ 128

माँ भारती

माँ भारती
शीश पर तेरे हिमालय
मुकुट सा सज्जित खड़ा है
तीन रंगों का उदधि जल
चरणों में तेरे पड़ा है
गगन तेरा चाँद तारों
सूर्य के नग से जड़ा है
क्रोड़ में तेरी असीमित
स्वर्ण सा वैभव गड़ा है
स्वर्ग से शुभ नीर आकर
माँ तेरी नदियों में बहते
कोटि-कोटि सपूत तेरे
माँ तेरे आँचल में रहते
शस्य श्यामल माँ धरित्री
स्वर्ग से भी उच्च कहते
साथ मिल कर साथ चल कर
विविध सुख दुख साथ सहते
विविध मौसम विविध जनगण
विविध धर्म परम्परायें
भिन्न जाति भिन्न भाषा
अपनी-अपनी मान्यतायें
किन्तु दिल हैं एक सबके
एक सबकी भावनायें
विविधता में एकता का
पाठ सब खुद को पढ़ायें
साथ मिल कर सब उतारें
जन्म भू की आरती
माँ भारती

❖

तो मैं भी कवि हूँ

अगर यह सब कविता है
तो मैं भी कवि हूँ
जब मस्तिष्क उबलता है
हृदय मचलता है
कुछ अस्फुट स्वर
कर्णरन्ध्रों में फुसफुसाते हैं
कुछ परिचित अपरिचित चेहरे
यादों की परिधि में
आने को कसमसाते हैं
जीवन के सारे तूफान
एक बारगी
बाहर आ जाना चाहते हैं
ढेर सी अनुभूतियाँ और अनुभव
कभी रोकर, कभी मुस्कुरा कर
निकलना चाहते हैं
मेरा सम्पूर्ण अस्तित्व
पिघल कर
मस्तिष्क और हृदय से
हाथों की उँगलियों तक
पहुँच जाता है
पोर पोर अक्षर बन जाती है
और कलम पकड़ कर
कागज पर बिखर जाती है
अगर यह सब कविता है
तो मैं भी कवि हूँ। ❖

मार्च 2005 में कादम्बिनी में प्रकाशित

साकार स्वप्न

जब-जब मानव के मन में
स्वप्नों ने आकार लिया
मानव ने सम्पूर्ण शक्ति,
सम्पूर्ण क्षमता लगा कर
उन स्वप्नों को साकार किया
स्वप्नों का आकार लेना
स्वप्नों को साकार करना ही
मानव की प्रगति का
स्वर्णिम इतिहास बनाते हैं
जिस दिन संघर्षों
और बाधाओं से घबरा कर
मानव सपने देखना छोड़ देगा
जीवन की वास्तविकताओं से
मुख मोड़ लेगा
वह दिन मानव की प्रगति का
विकास का, स्वर्णिम इतिहास का
अन्तिम दिवस होगा
निराकार, साकार कैसे होगा
स्वप्न आकार कैसे लेगा
ऊँचे आसमानों को कैसे छुएगा
नया इतिहास कैसे लिखेगा
नया इतिहास कैसे बनेगा
नया संसार कैसे बनेगा
नया आकार कैसे रचेगा
मानव की यही सोच
निरन्तर प्रगति की प्रतीक है
इसी में झंकृत
जीवन संगीत है

❖

जीवन के वो खोए पलछिन

काश कोई मुझको लौटा दे
मेरे बचपन के प्यारे दिन
आज बुढ़ापा याद कर रहा
जीवन के वो खोए पलछिन
कभी याद आती हैं मुझको
बचपन की वो प्यारी गलियाँ
जहाँ खेलते थे सखियों संग
दौड़-दौड़ कर लुका छिपाई
कभी याद आतीं वो गुड़ियाँ
करते थे जिनकी शादी हम
बजा ढोलकी नाच-नाच कर
खाते पूरी और मिठाई
छोटी-छोटी खुशियाँ थीं तब
छोटे झगड़े और लड़ाई
पल भर पहले जो था दुश्मन
पल में उसकी करें बड़ाई
सावन के वो प्यारे झूले
सखियों संग जो गाए गाने
उनको आज तलक न भूले
रोज़ आ जाते हमें रुलाने
खाते थे लेकर चटकारे
कमरख इमली चूरन गोली
कभी न खाना तुम ये चीज़ें
समझाती थी अम्मा भोली
बारिश में हम छप-छप करते
कूद-कूद कर खूब नहाते
और कागज़ की नाव बना कर

हँस-हँस कर थे हम तैराते
सब कुछ जाने कहाँ खो गया
लगता जैसे सब था सपना
कैसे लाऊँ और कहाँ से
खोया प्यारा बचपन अपना
कैसे अतीत से खींच लाऊँ मैं
मेरे बचपन के प्यारे दिन
आज बुढ़ापा याद कर रहा
जीवन के वो खोये पलछिन
काश! कोई मुझको लौटा दे
मेरे बचपन के प्यारे दिन।

❖

इच्छाओं के पंख

कभी-कभी मेरी इच्छाओं के
पंख उग आते हैं
बड़ी विचित्र होती है
उन पंखों की उड़ान
उन पर बैठ कर
मैं घूमना चाहती हूँ तीनों जहान
मैं सागर की लहरों पर बैठ कर
सागर की अगाध गहराइयों में
दूर तक जाना चाहती हूँ
उसकी गोद में छिपे अथाह खजाने की
थाह पाना चाहती हूँ
रंग-बिरंगी मछलियों से
असंख्य जलचरों से
बतियाना चाहती हूँ
उन्हें अपने हाथों से
सहलाना चाहती हूँ
कभी पर्वतों की ऊँची चोटियों पर चढ़ कर
उनके चरणों का स्पर्श करती
घाटियों वादियों नदियों को देखना चाहती हूँ
कभी आकाश में जाकर
चाँद तारों से आँख मिचौली खेलना चाहती हूँ
कभी उन्हें लाकर
अपनी चुनरी में टाँक लेना चाहती हूँ
मैं खेतों-खलिहानों में
चिड़िया की तरह चहकना चाहती हूँ
मैं उपवन के फूलों सी महकना चाहती हूँ
मैं घने जंगलों में
हिरणी सी भागना चाहती हूँ

मैं वनकन्या सी वृक्षों पर झूलना चाहती हूँ
मैं प्रकृति में खो कर
इस मायावी दुनिया को
भूल जाना चाहती हूँ
अपनी इच्छाओं के पंखों के साथ
उड़ जाना चाहती हूँ
दूर, बहुत दूर, बहुत दूर।

❖

फर्नीचर पर फर्नीचर

वह फर्नीचर का मशहूर विक्रेता था
सुन्दर फर्नीचर डिज़ाइन करता था
दुनिया उसके बनाये फर्नीचर पर
शान से बैठती थी
रोड़ों से उठकर
करोड़ों में खेल रहा था
लेकिन आने वाला कल
उसके साथ कुछ नया नाटक खेल रहा था
उसे अभी बहुत कुछ नया करना था
वह खुद को बूढ़ा नहीं मानता था
पर बेटे का मन उसको बूढ़ा मान कर
सेवानिवृत्त करना चाहता था
बेटे ने बड़ी कुशलता से पिता के जीते जी
पिता को पहना दिया हार
चुपके से हथिया लिया सारा व्यापार
पूरा घर द्वार
अब पिता
अपने बनाये फर्नीचर पर
बैठा रहता है
हाथ पर हाथ रख कर
मुँह दिल और दिमाग पर
ताला लगा कर
ठीक उस बेजान फर्नीचर की तरह
कभी-कभी वह
अपने ऊपर व्यंग से हँसता है
देखो
फर्नीचर पर फर्नीचर बैठा है

❖

व्यवस्था को बदल डालो

बहुत शोर, कुण्ठा, आक्रोश है
सबके दिल दिमाग में भयंकर रोष है
व्यवस्था गल सड़ गई है
अव्यवस्था बहुत बढ़ गई है
पूरा ढाँचा टूट रहा है
हर कोई इक दूजे को लूट रहा है
अब वक्त आ गया है
व्यवस्था को बदल डालो
कोई अपने दिल से नहीं पूछता
व्यवस्था क्या है?
व्यवस्था तुम्हारी अपनी कृति
तुम्हारे व्यवहार, विचारों, क्रियाओं की अनुकृति
तुम्हारी अपनी रचना है
जिस दिन समाज का हर सदस्य
स्वयं को बदल लेगा
किसी को गुड़ मत खाओ कहने से पहले
खुद गुड़ खाना छोड़ देगा
अपने विचारों को विनाश से विकास की ओर
ध्वंसात्मक से क्रियात्मक, रचनात्मक
की ओर मोड़ लेगा
जिस दिन हम भूल जायेंगे
द्वेष, घृणा, असद् व्यवहार
जात-पात, ऊँच-नीच भ्रष्टाचार
अपना लेंगे नैतिक विचार
व्यवस्था स्वयं बदल जायेगी
हर मानव स्वयं पर नियन्त्रण रखेगा
तो व्यवस्था स्वयं नियन्त्रित हो जायेगी।

❖

जीवन और बाधायें

गिरना
गिर कर उठना
उठ कर गिरना
जीवन की वास्तविकताएं
सुख-समृद्धि-सफलता
जीवन की कामनायें
सुख-दुःख, आशा-निराशा
क्या खोया, क्या पाया
कितना खोया, कितना पाया
क्यों हुआ, क्यों न हुआ
मात्र भावनायें
जीवन केवल एक रास्ता है
जिस पर
जीवित रहने तक चलना है
राह बड़ी कठिन है
चलना हर दिन है
हर कदम पर
काँटे, झाड़ और झंखाड़ हैं
ऊबड़-खाबड़ पहाड हैं
कहीं मैदान समतल भी हैं
कहीं सागर अतल भी हैं
जीवन चलता रहता है
चाहें आयें कितनी बाधायें
चाहे हों कितनी दुविधायें

❖

समाधिस्थ

कई भूली हुई बातें
जब तब याद आकर
मेरी स्मृतियों के ढेर को कुरेद कर
न जाने क्या ढूँढती हैं
कुरेद-कुरेद कर निकाल लाती हैं वे क्षण
जिन्हें मैं भूल जाना चाहती हूँ
ढूँढ लाती हैं वो कड़ियाँ
जिन्हें मैं तोड़ देना चाहती हूँ
अतीत के इस ढेर में
जो पल छिपे हैं
वे अनावृत्त न हों तो अच्छा है
जिस दिन उनका आवरण हटा
स्मृतियों की हँसती रोती परछाइयाँ
मेरे जीवन के ताने बाने
छिन्न-भिन्न कर देंगी
अब तन मन में इतनी शक्ति नहीं रही
कि भूली-बिसरी यादों को
याद करके उन पर हँस सकूँ
या रो सकूँ
मैं स्मृतियों के जंगल में भटक कर
टूटना नहीं चाहती
मैं वर्तमान को
अतीत के खंडहरों में
समाधिस्थ करना नहीं चाहती।

❖

दृष्टि भ्रम

आँखों पर पड़े भ्रम के पर्दे में से
हमारी दृष्टि झाँक नहीं सकती
इसलिए वह सामने वाले की
सही कीमत आँक नहीं सकती
भ्रम के पर्दे के पीछे से हमें
वही छवि दिखाई देगी
जो हमारा हृदय देखना चाहता है
दृष्टिभ्रम से सत्य
अपना अस्तित्व खो बैठता है
हाँ भ्रम का पर्दा हटने पर
सच आता है नज़र
ठीक वैसे ही
जैसे रात का अँधेरा छँटने पर
सूरज अपनी जगह पर ही निकलता है
सूरज की आग से जो अँधेरा पिघलता है
वह भाग कर मुँह छिपा लेता है
झूठ भी सच के तेज से
खुद को तपा लेता है
जैसे सूरज निकलने पर
सारी सृष्टि बदल जाती है
वैसे ही भ्रम का पर्दा हटने पर
हमारी दृष्टि बदल जाती है।

❖

बदलेगा मौसम

तूफान आया है
तो थमेगा भी
फिर से एक
नई शुरुआत होगी
इन्तज़ार करो
बिजलियाँ चमकेंगी
अँधियारी रात में
घर की छत
टप-टप-टप
टपकेगी परात में
सूनी आँखों से ताकोगे
कुछ नहीं हाथ में
यह रात भी कट जायेगी
इन्तज़ार करो
बदलेगा मौसम
सदा ऐसा न रहेगा
पाँव जमा कर रखने वाला
बाढ़ में न बहेगा
आँधी तूफान
हवायें सर्द
गर्मी की तपिश
ये पत्ते ज़र्द
ग़म और दुख दर्द
ज़िन्दगी पर छाई ग़र्द
एक दिन चले जायेंगे
नये दिन की सुबह लेकर
नये मौसम आयेंगे
इन्तज़ार करो। ❖

यह कैसा नगर है

यह कैसा नगर है
सब तरफ भागमभाग
जैसे लगी है आग
कोई किसी को जानता नहीं
शायद खुद को भी पहचानता नहीं
दिल कहीं और है
दिमाग कहीं और
आँखों को दिखती
नहीं कोई ठौर
मंज़िल कहाँ है
किसी को पता नहीं
फिर भी दौड़ रहे हैं
खुश हैं कि दूसरों को
पीछे छोड़ रहे हैं
भावनायें संवेदनायें
सब खो सी गई हैं
दिग्भ्रमित से
दो राहों चौराहों पर
बौराये से भटक रहे हैं
खो गई डगर है
यह कैसा नगर है।

❖

खण्डहर और घर

कभी तुमने
मेरे मोहल्ले के
कोने वाले खण्डहर मकान को देखा है
कभी वहाँ जाकर
उन जर्जर दीवारों
टूटे दरवाजों
और छतों से झाँकते
आसमान को देखा है
सूने आँगन में खड़ा
बूढ़ा आम का पेड़
आज भी याद करता है
पुराने दिन
बीते ज़माने
जब यह मकान
गर्व से सिर उठा कर खड़ा था
क्योंकि यह मोहल्ले में
सबसे सुन्दर सबसे बड़ा था
घर में रहता था एक बड़ा सा परिवार
सब समझते थे एक दूसरे को अपना आधार
होली, दीवाली, दशहरे पर
धूम मच जाती थी
खुशियों की हवायें यहाँ
झूम-झूम आती थीं
बूढ़ा आम का पेड़ याद करता है
अपनी डाल पर पड़े सावन के झूले
तीजों के गाने जो अब तक न भूले
बदले अचानक वो दिन सुहाने

कहाँ खो गये वो पुराने ज़माने
घर के कुछ लोग शहर छोड़ गये
कुछ दुनिया छोड़ गये
ये जर्जर दीवारें
अभी भी अपनी जड़ें पकड़ कर
ज़िंदा रहने की कोशिश कर रही हैं
शायद कल मेरे अपने आ जायें
और मेरा नाम
खण्डहर से बदल कर
एक बार फिर
घर हो जाये

❖

शुभ करें

जो हुआ अच्छा हुआ
जो हो रहा अच्छा ही है
जो हुआ था हो चुका
न याद कर अच्छा ही है
और जो होगा भला होगा
सरल विश्वास ग़र होगा
न चिन्ता कर कि क्या होगा
भला जो है वही होगा
क्या गया रोते हो क्यों
क्या लाये थे जो खो दिया
छोड़ कर जाना यहीं
संसार ने जो भी दिया
हाथ खाली आये थे
जाना भी खाली हाथ है
छूट जायेगा सभी कुछ
जो हमेशा साथ है
जो हमारा है नहीं
उसके लिये हम रोयें क्यों
दुख के कारण को भुला कर
चैन से न सोयें क्यों
मृत्यु तो जीवन नया है
मृत्यु से हम क्यों डरें
शोक और चिन्ता भुला कर
जो करें बस शुभ करें।

❖

ग़रीबी की ज़िंदगी

ग़रीबी की ज़िंदगी की क्या कहिये
जितना जलती है उतना मुस्कुराती है
हिम्मत की उसकी क्या कहिये
ठोकरें खा कर भी बढ़ती जाती है
भूखे खाली पेटों की क्या कहिये
फाके में भी गाने गाते हैं
आँखों के आँसू अन्दर बह कर
गाने बन बाहर आते हैं
क्या कहिये वक्त की तानों पर
हर साँस राग बन जाती है
निर्धन की सूखी होली भी
साज़ों पर फाग सुनाती है
दीवाली के दीयों में
जलता है खून ग़रीबों का
हर पर्व दिखाता है आकर
इक खेला अजब नसीबों का
ग़रीबी की ज़िंदगी की क्या कहिये
जितना रोती है उतना खिलखिलाती है
कभी हँसती है कभी गाती है
कभी रोती है कभी बिलबिलाती है।

❖

मौसम का रुख

सावधान
मौसम का रुख बदल रहा है
आग सी तपती गर्म हवाओं के झकोरे
हू हू बजती लूएँ
सूरज का आग उगलता रूप
पाँव तले जलती ज़मीन
शोलों सी चमकती धूप
चिलचिलाती सड़क
बिलबिलाते पैर
सावधान
मौसम का रुख बदल रहा है
मूसलाधार बारिश
बादल फट पड़ने का सा अहसास
आकाश में ताण्डव करती बिजलियाँ
बम विस्फोटों की सी आवाज़
ग़रीब के घर टपकता पानी
अमीर के मन मचलता पानी
बिरहिन को रुलाता पानी
सावधान
मौसम का रुख बदल रहा है
हड्डियों को चीरती ठंडी हवायें
तन को गलाता ठंडा पानी
सड़क पर ठिठुरते मरते जिस्म
कुदरत की कैसी नादानी
सावधान
मौसम का रुख बदल रहा है।

❖

मेरे घर की दीवारें

मेरे घर की दीवारें
ये खिड़कियाँ ये दरवाज़े
ऐसा लगता है
जैसे लगाते हैं मुझे आवाज़ें
जब मैं कुछ समय के लिए
इनसे दूर चली जाती हूँ
और जब बाहर से लौट कर आती हूँ
लगता है जैसे ये दीवारें
मुझे देख कर खुश हो जाती हैं
मुझे देख कर मुस्कुराती हैं
मुझे देख कर गुनगुनाती हैं
खिड़कियों से आती हवायें
मेरे कानों के पास आकर सरसराती हैं
शायद धीरे से कुछ कह कर हँस जाती हैं
मेरी दीवारों की एक-एक ईंट मुझसे कहती है
हम सिर्फ तुम्हारे लिये हैं
हमने तुमने साथ-साथ ही तो
सुख-दुःख के क्षण जिए हैं
तुम्हारे जीवन के हर राज़ को
हमने अपनी कठोर परतों में बड़ी कोमलता से
बड़े यत्न से छिपा कर रखा है
इस घर के अन्दर जिया गया
तुम्हारा हर पल तुम्हारा अपना है
यह घर ही तो तुम्हारा सुन्दर सपना है
इस घर का हर दरवाज़ा
तुम्हें नई राहों नई मंजिलों की ओर ले जायेगा
तुम्हारे सुख से इस घर की हर दीवार
हर खिड़की और दरवाज़ा मुस्कुरायेगा।

❖

आस्तीन में साँप पल जाते हैं

कैसे कभी-कभी
इन्सान के दिन बदल जाते हैं
जब जाने अनजाने में
आस्तीन में साँप पल जाते हैं
ये साँप हमें दूसरों से आगाह करते हैं
और खुद हमें गुमराह करते हैं
हम इन्हें समझ बैठते हैं अपना
हमारी बर्बादी होती है इनका सपना
ये हमारे घर को अपना बना कर
हमें घर से बेगाना कर देते हैं
अमृत अपने लिये रख कर
हमें पीने को ज़हर देते हैं
ये अपनों को बना देते हैं पराया
दूर हो जाता है हमसे
हमारा अपना ही साया
जब तक हम इनको पहचानें
हम खुद को भूल चुके होते हैं
हमारे जीवन के सब फूल
शूल बन चुके होते हैं
हमें राह दिखाने का वादा करने वाला
गुमराह करके चला जाता है
हमें दुनिया से बचाने वाला
हमें लूट के चला जाता है
ऐसे कभी-कभी दोस्तों में
दुश्मन निकल आते हैं
कभी-कभी आस्तीन में
साँप पल जाते हैं।

❖

बिना दिल का शहर

पत्थरों के इस शहर में
दिल के शीशे को संभाल कर रखना
कहीं लड़खड़ा न जाना
पत्थरों से टकरा न जाना
दिल बड़ी नाजुक चीज़ है
कड़ी मार सह नहीं पायेगा
पत्थरों की चोट से टूटा
तो फिर जुड़ नहीं पायेगा
यहाँ रहना है तो दिल को बदल डालो
शीशे की जगह फौलाद का बना लो
बिना दिल के इस शहर में
कदम टिका कर चलना
गिर गए तो सहारा नहीं मिलेगा
अपनी ज़िंदगी की नाव की
पतवार थाम के रखना
डूब गए तो किनारा नहीं मिलेगा
इस शहर में इन्सान नहीं रोबोट हैं रहते
जो सिर्फ करते हैं, कुछ नहीं कहते
जिनके सीने में
दिल की जगह मशीन रहती है
उनसे टकरा गए तो उठ नहीं पाओगे
जीवन का सारा क्रम बदल जायेगा
जीवन का सारा धर्म बदल जायेगा
पत्थरों से रुका रास्ता
घर की तरफ मुड़ नहीं पायेगा
पत्थरों से टूटा दिल
फिर कभी जुड़ नहीं पायेगा।

❖

औरत की परिभाषा

कैसे परिभाषित करें
औरत शब्द की परिभाषा
बड़ा दुरूह शब्द है
जिसमें भरी है गहरी निराशा
औरत बचपन में पिता की
जवानी में पति की
बुढ़ापे में संतान की गुलाम होती है
वह किसी की बेटी
किसी की पत्नी
किसी की माँ होती है
उसकी एक यही पहचान होती है
स्वयं तो वह गुमनाम होती है
पुरुष की उद्दण्डता
सिर्फ औरत के लिए कलंक होती है
पुरुष की छवि तो सदा निष्कलंक होती है
ससुर की नफरत सास का त्रास
ननद देवरों के व्यंग पति की भड़ास
अपनों के लिये जीना
अपनों से पाई घृणा
जब तक रहती है
सब सहती है
कभी-कभी औरत
किसी जंगल या खाई में भटक जाती है
ज़हर पी लेती है या फाँसी पर लटक जाती है
पानी में डूब जाती है
पति की चिता में कूद जाती है
जीवन भर अपने अस्तित्व को

अपने स्वत्व को खोजती औरत
पंचतत्वों में मिल कर
अस्तित्वहीन हो जाती है
स्वत्व को खो कर
परमतत्व में विलीन हो जाती है
औरत को बदलनी है
औरत शब्द की परिभाषा
जगानी है हर औरत में
एक नई आशा
कैसे करें औरत शब्द की परिभाषा
कैसे इसे परिभाषित करें?

❖

समाज की सूरत

यह ज़माने में कैसी हवा चल गई है
मुँह छुपाने की कला दवा बन गई है
आँखों पर काला चश्मा चढ़ाये घूम रहे हैं
अपने भावों को छुपाये सब झूम रहे हैं
चेहरा दिल का आईना नहीं रह गया
चेहरे का नूर काले चश्मे में बह गया
मुखौटों के भीतर क्या है कैसे बतायें
कैसे निडर घूम रहे सब मुँह छुपाये
बगल में छुरी मुँह में राम की भाषा जो अपनायें
उनमें कौन अपना है कौन पराया कैसे समझ पायें
सबकी आँखों पर काली पट्टियाँ चढ़ी हैं
सबने अपने हिसाब से सामने वाले की मूरत गढ़ी है
जिस दिन आँखों से ये काली पट्टियाँ हट जायेंगी
उस दिन समाज की सूरत बदल जायेगी

❖

फासलों के फैसले

फासलों को मिटाने के फैसले
समय रहते कर लेने चाहिये
न जाने फिर समय आये कि न आये
कभी-कभी दो कदम की दूरियाँ
मीलों में बदल जाती हैं
दो क्षण की दूरियाँ
बरसों में बदल जाती हैं
जन्मों के रिश्ते
पल में टूट जाते हैं
दिल में रहने वाले
दिल से रूठ जाते हैं
समय रहते उनको मना लेना चाहिए
न जाने फिर समय आये कि न आये
भावनायें जम जाती हैं
अनुभूतियाँ मर जाती हैं
कच्ची डोर पर दुनिया
तीखे वार कर जाती है
नेह के धागे
चटका कर न तोड़ना
एक बार टूटे
तो कठिन होगा जोड़ना
समय रहते सँभल जाना रिश्ता न कट जाये
न जाने फिर समय आये कि न आये
रिश्तों में लगी आग समय रहते बुझा लेना
बाद में सिर्फ राख ही न हाथ आये

❖

मौन चीत्कार

आजकल कुछ प्रश्न
हर समय हृदय को चीर कर
बाहर निकलना चाहते हैं
हम पूछना चाहते हैं कुछ प्रश्न
अपने दिल के टुकड़ों से
अपने लाडलों से
अपने उत्तराधिकारियों से
अपने जीवन के हर पल के
अपनी धन, दौलत, मान और यश के
अधिकारियों से
तुम उम्र बढ़ने के साथ-साथ
हमारे मन में और मोह जगा रहे हो
पर हम उम्र बढ़ने के साथ-साथ
तुम्हारे मन में छोह क्यों जगा रहे हैं
तुम्हारी नई सोच
और हमारी पुरानी सोच में अन्तर है
यह अन्तर तो तुम्हारी अगली पीढ़ी
और तुम्हारे बीच भी रहेगा
तब किसका कहा कौन सहेगा
हम बूढ़े ही तो पैदा नहीं हुए थे
हमने भी देखे हैं
जीवन के सब दृश्य
शैशव की थिरकन
यौवन का नर्तन
संगीत और कला
कहकहों का सिलसिला
दोस्त और मित्र
जीवन के कैनवास पर चित्रित

रंग-बिरंगे चित्र
अर्जन और पालन का सुख
जब आठों पहर था
दृष्टि पथ पर –
केवल तुम्हारा मुख
हमारी अंगुली पकड़ कर चलते-चलते
तुम अचानक इतने बड़े कैसे हो गये
कि हम सम्पूर्ण अस्तित्व सहित
तुम्हारी दृष्टि में बौने हो गये
आज हमारे जीवन के अनुभव
हमारा चलना, फिरना, हँसना, बोलना
सब तुम्हारे लिये बेमानी हो गये
हमारी सोच तक पर पहरे लग गये
कल तक हम परिवार के मुखिया थे
आज दुखिया क्यों हो गये
तुम वही हो न
जिन्हें हम झूम-झूम कर
कंधों पर, पीठ पर
सवारी करवाते थे
आज हम तुम्हारे लिये
बोझ क्यों हो गये?
न हमें अधिक कुछ नहीं चाहिये
सिर्फ प्यार के दो क्षण
और दो मीठे बोल
क्या इतना दे सकोगे?
क्या करोगे इतना एहसान कि –
हमारी मृत्यु को
तनिक कर दो आसान।

❖

प्यासी लहरें

सागर की ये प्यासी लहरें
किसको ढूँढ रही हैं
तट पर आकर सर टकरा कर
किसको पूछ रही हैं
दूर-दूर तक होकर आतीं
जाने क्या-क्या लेकर आतीं
तट पर आ सर पटक-पटक कर
कहती हैं कुछ बहक-बहक कर
मन में अनगिन प्रश्न समेटे
चाहें तट से बातें करना
पर तट तो चट्टान बना है
जाने सिर्फ एक चुप रहना
तट से कुछ-कुछ बातें कहतीं
उसकी चुप्पी को भी सहतीं
देखें तट की बेपरवाही
सोचें मन में करें तबाही
फिर जाने क्या मन में आती
खाली हाथ लौट फिर जातीं
सदियों से बलखाती लहरें
सदियों से इठलाती लहरें
यूँ ही टूट रही हैं
तट पर आकर
सर टकरा कर
किसको पूछ रही हैं।

❖

गले पर छुरा है

कौन दे पायेगा साथ सच्चाई का
सबके गले पर छुरा है कसाई का
किसके दरवाज़े पर जाओगे
जान बचाने के लिए
सभी दरवाज़ों पर ताले हैं
आज तुम्हारे लिये
कोई भी तुम्हारी आवाज़ सुनेगा नहीं
सबने कानों में लगा रखी है कस कर रूई
जीभ पर भी हैं सबने लगा रखे पहरे
चाहे दिलों पर घाव हों कितने गहरे
किसी के दौलत का
किसी के पास ताक़त का ज़ोर है
देखो नज़र उठा के जिधर
दहशत का शोर है
आम आदमी की आवाज़
सुनता नहीं कोई
कैसे बचायें उसको
समझता नहीं कोई
कैसे पहुँचे ऊँचे लोगों तक इसकी फरियाद
सबको एक शंका सी है
वो गुलाम हैं या आज़ाद
कोई नहीं देता साथ सच की लड़ाई का
किसी को रहा नहीं विश्वास खुदा की खुदाई का
डर ने गला घोंट दिया
विश्वास का सच्चाई का
सबके गले पर छुरा है कसाई का।

❖

साहित्य समाज का दर्पण

साहित्य समाज का दर्पण होता है
समाज में घटने वाला हर सुकृत दुष्कृत
साहित्य के अर्पण होता है
कविता, कहानी, निबन्ध
किसी पर नहीं है प्रतिबन्ध
सभी दिखाते हैं लोग क्या कर रहे हैं
कैसे जी रहे हैं कैसे मर रहे हैं
चौरी, डकैती, भ्रष्टाचार
तस्करी, फिरौती, बलात्कार
कैसे रिश्ते भूलते जा रहे हैं संस्कार
दिल हिलाने वाली घटनाओं से
भरे रहते हैं टी.वी. और अखबार
तरह-तरह के धोखे और ठगी
कैसे कहीं प्रेम की कहीं धन की आग लगी
कैसे ईर्ष्या में दूसरे को ख़त्म करने की भावना जगी
आस्तीन में पलने वाले साँपों के कारनामे
लोकसभा और विधानसभाओं में राजनेताओं के ड्रामे
घर, देश और विश्व
किसी को न बख्शने वालों की कथायें
अन्तहीन आतंक की हृदयग्राही व्यथायें
क्या यही सब साहित्य हम छोड़ कर जायेंगे
आने वाली पीढ़ियों के लिये
समय रहते अगर हम समाज को नहीं सुधारेंगे
तो अपने भारत की बिगड़ती तस्वीर कैसे बचा पायेंगे
कैसे अपने पूर्वजों की धरोहर सुरक्षित रख पायेंगे
कैसे आने वाली नस्लों को अच्छे संस्कार दे पायेंगे।

❖

साम्य

पेड़ के सूखे बूढ़े पत्ते
उड़ कर हवा के साथ
जाने कहाँ जाते हैं
छोड़ कर अपनी जड़ों को
दूर उड़ जाते हैं
कोई उन्हें रोकता नहीं
'मत जाओ' कह कर टोकता नहीं
इस अहसास के साथ जाकर
वापिस नहीं आते हैं
मानव के जीवन में भी
ऐसे क्षण आते हैं
जब बुढ़ापे से जर्जर
झुके कंधों टूटे घुटनों से चलते
थकित तन-मन से निराशा में पिसते
झुर्रीदार प्राणी से
उसकी जड़ें डालियाँ
और नये पत्ते
मुक्ति पाना चाहते हैं
कैसा साम्य है प्रकृति की कृतियों में
अन्तर है सिर्फ आकृतियों में।

❖

गोल-गोल रोटियाँ

दूर ऊँचे आसमान तक जाती
ऊँचे-ऊँचे पर्वतों की चोटियाँ
छू रहीं थीं चाँद को
ऊँचे पर्वतों की चोटियाँ
रसिक को दिख रही थी
चाँद में बरसती चाँदनी
गा रहा था हो मगन
रस से भरी मधु रागिनी
जब तन और मन दोनों हों भरे
सब हरा दिखाई देता है
चंदा की चाँदनी में सब कुछ
सुनहरा दिखाई देता है
पर्वत के नीचे खड़ा एक
काँपती टाँगों और भूखे पेट वाला इन्सान
सोचता है काश मेरी मदद कर दें भगवान
चढ़ जाऊँ पर्वत पर पहुँच जाऊँ आसमान तक
तोड़ लाऊँ गोल-गोल चमचमाती रोटियाँ

❖

क्यों भूल जाती हो

नारी –
तुम क्यों भूल जाती हो
तुम ही आदि शक्ति
काली दुर्गा भवानी हो
ब्रह्मा, विष्णु, महेश को
आसुरी शक्तियों से बचाने वाली
आद्या शक्ति हो
स्वर्ग से भी महान
मातृ शक्ति हो
नींव हो परिवार की
शक्ति हो घर संसार की
तुम अपनी सम्पूर्ण शक्ति को
एक अदृश्य परिधि से घेर कर
स्वयं को अपूर्ण बना कर
क्यों समाज को
अपने दैवी गुणों से वंचित कर
स्वयं को और समाज को
धोखा देती हो
निकलो स्वयंनिर्मित खोल के बाहर
आओ ढक लो पूरे संसार को
अपने स्नेह स्निग्ध आँचल की
बरगद सी विस्तृत छाँव तले
दिखा दो अपने सपूतों को
सही लक्ष्य सही मार्ग
हे महिषासुरमर्दिनी
कुचल दो आसुरी बाधाओं को
पाँव तले।

❖

सड़क और आदमी

सड़क पर एक आदमी ने
दूसरे आदमी से पूछा
यह सड़क कहाँ जाती है
सड़क ने सुना
सुनकर व्यंग से मुस्कुराई
फिर गुनगुनाई
यह आदमी भी
कितना मूर्ख होता है
खुद यहाँ वहाँ जाता है
भटकता है सड़क-सड़क
भागता फिरता है
कभी यहाँ कभी वहाँ
ढूँढ़ता फिरता है मंज़िल
कभी भूलता है
कभी ढूँढता है रास्ते
कोई इसे बताये
ठीक से समझाये
सड़क कहाँ जाती है
सड़क तो सदा यहाँ
अपनी जगह ही रहती है
देखती है भटकते आदमी को
राह दिखाती है
राह में अटकते आदमी को।

❖

अन्दर की ताकत

जाने क्या-क्या है लिखा किस्मत में होना
बन गया इन्सान किस्मत का खिलौना
रात दिन गिन-गिन के तारे कट रहे दिन
नींद है न चैन है चुभता बिछौना
अपने हाथों खोदता गड्ढे है गहरे
फिर कहे भगवान से इनको भरो ना
हँसते किस्मत के खुदा हालत पे उसकी
जो किया उसके भरोसे अब रहो ना
क्यों नहीं पहचानते ताकत को अपनी
खुद की ताकत भूल कर हर दिन मरो ना
काम जो करते खुदा है साथ उनके
आलसी बन कर कभी यूँ दुख सहो ना
है बड़ी ताकत तुम्हारे अपने अन्दर
क्यों बने रहते हो किस्मत का खिलौना।

❖

सौ फीसदी जीने के लिए

ज़िंदगी बहुत छोटी है
इस छोटी सी ज़िंदगी को
हर इन्सान पूरा जीना चाहता है
इसके हर लम्हे को
खुशी से जीना चाहता है
ज़िंदगी को सौ फीसदी जीने के लिए
बना लो कुछ उसूल
कर लो ज़िंदगी से
ज़िंदगी का हक वसूल
ज़िंदगी को सौ फीसदी जीने के लिए
हर छोटी से छोटी चीज़ में से
खुशियाँ तलाश लो
हर लम्हे को खुशी से जीओ
न कभी उदास हो
रौशनी की किरणों को
बिखेर लो आँगन में
किरणों के कण-कण को
समेट लो दामन में
अँधेरों की परछाई तक
पास न आने दो
सौ फीसदी जीने का राज़
गुनगुनाते सवेरों को बताने दो
हर लम्हा खुशी से
सींचना ही ज़िंदगी है
हर लम्हे से अमृत
खींचना ही ज़िंदगी है।

❖

रिश्तों का संसार

ये ज़ंग खाये हुए रिश्ते
कब तक निभाए जा सकते हैं
परत दर परत
किरच किरच बिखरते रिश्ते
हर शब्द के साथ
आग में पड़े घी की तरह
दहकते रिश्ते
कब तक साथ निभायेंगे
एक दिन भरभरा कर
खुद ही टूट जायेंगे
टूटे नहीं
तो गाँठे पड़ जायेंगी
गाँठ लगी डोरी
कब तक भार सह पायेगी
दिलों में भरी आग
कब तक ठंडी रह पायेगी
धुँआ देने लगेंगे
ये सुलगते रिश्ते
एक दिन दम घोंट देंगे
ये सुलगते दहकते जंग लगे रिश्ते
इस जंग को हटाना होगा
रिश्तों को बचाने के लिये
रिश्तों के धागों को
गाँठों से बचाना होगा
एक सुमधुर संसार रचाने के लिये
नेहभरी दुनिया बसाने के लिए।

❖

वक़्त का क्या पता

वक़्त के फासलों ने कितने फैसले
कितने जीवन बदल डाले
कब बहारें बदल जायें पतझड़ में
कब वक्त अपने शिकवे निकाले
पता क्या किसी को
कोई कैसे जीता
खबर है किसे
कोई है ज़हर पीता
कोई चुपके-चुपके समय काटता
कोई हंस के रोके है दुख बाँटता
दिन हफ्ते महीने
सालों में बदल जाते हैं
सिर्फ वक्त से ही बनते हैं
अपने पराये रिश्ते नाते हैं
क्या पता वक्त की लहर
कब किसे कहाँ बहा ले
कब शीतल समीर
बदल जाये अंधड़ में
कब वक्त अपने शिकवे निकाले
क्या पता कब तक
किसको अपनी परतों में छुपा ले
वक्त का क्या पता
किसे छोड़े किसे खा ले।

❖

कैसी परीक्षा

मेरे सामने लहराता प्रकाश का सागर
सूरज चाँद सितारों से आलोकित
विस्तृत राहें मेरी प्रतीक्षा कर रही हैं
मैं अँधेरों से भाग कर
प्रकाश की ओर जाना चाहती हूँ
पर यह कैसी छटपटाहट है
कदम आगे बढ़ाना चाहती हूँ
पर हृदय पीछे भाग कर
अतीत के अँधेरों में
जाने क्या-क्या खोजने लगता है
हृदय में भरे अँधेरे
अतीत के अँधेरों की ओर
आकर्षित होते हैं
बुद्धि ज्योर्तिमान भविष्य के
स्वर्णिम स्वप्न दिखाती है
अन्दर की वीरानियाँ
बाहर की हरियाली
अंदर के अँधेरे
बाहर की रौशनी
अंदर की खामोशियाँ
बाहर जीवन संगीत
सब मुझे एक दूसरे से खींच कर
अपनी ओर ले जाना चाहते हैं
दोनों में सामंजस्य कैसे होगा
मेरा भाग्य किसका होगा
निर्णय कैसे हो
यह कैसी परीक्षा है?

❖

आम आदमी

अखबार की सुर्खियों में खबर छपी
कहीं पर एक बम फूट गया
सिर्फ दो मरे बारह घायल हुए
इसमें कितना सच था, कितना झूठ था
चर्चे शुरु हो गए
अफवाहों के बाज़ार गर्म हो गए
धर्म, जाति, राजनीति, कूटनीति सब सक्रिय हो गए
सिर्फ मृतकों और घायलों से सम्बद्ध कार्य निष्क्रिय हो गए
नेताओं के अन्दर के अभिनेता
रंगमंच पर आ रहे हैं
सुसज्जित भवनों के अन्दर
आगे के कार्यक्रम बना रहे हैं
कितने वोट बन सकते हैं
इस विस्फोट के आधार पर
किस-किस को तोड़ सकते हैं
आक्रोश के आधार पर
जो मर गये वो चले जायें
जो ज़िंदा हैं वो क्यों छले जायें
ख़ास लोगों को अपने अभिनय का
पूरा हक मिले
शब्दाडम्बरों से बने
मधुर भाषणों को
कोई तो अर्थ मिले
लोकतन्त्र है
यूँ ही वोट देता रहेगा आम आदमी
होते रहेंगे विस्फोट
यूँ ही मरता रहेगा आम आदमी।

❖

बहुत देर रोई

पुराने ज़माने की यादों में खोई
बहुत देर तड़पी बहुत देर रोई
वो सोने के दिन थे वो चाँदी की रातें
किया करते थे चाँद तारों से बातें
कभी बादलों से मुलाकात होती
तो चुपके से उनसे बहुत बात होती
शक्ल हर तरह की बनाते थे बादल
उन्हें देखते हम थे हँसते थे बादल
हँसी उनकी हम पर बरसती थी आकर
हर इक बूँद थी प्यार लाती छिपाकर
वो गर्मी में सूरज की तपती दुपहरी
मगर हमको लगती थी कितनी सुनहरी
वो अम्मा की लगती थी घर में कचहरी
वो मासी, बुआ, चाची की बातें गहरी
कभी बारिशों के जब आते झकोरे
बनाती थी माँ गरमागरम पकोड़े
वो सर्दी में कोयले की जलती अँगीठी
दिलाती है यादें मिसरी सी मीठी
वो भैया वो जीजी वो सखियाँ सहेली
सभी बन गए अब तो बस इक पहेली
पहेली की उलझन में उलझी मैं सोई
मैं सपनों में तड़पी मैं सपनों में रोई
पुराने ज़माने की यादों में खोई
बहुत देर तड़पी बहुत देर रोई।

❖

ये नज़ारे

दूर तक फैली हुई इन घाटियों में
ढूँढती रहती हैं कुछ मेरी निगाहें
दूर ऊँचे पर्वतों की चोटियों से
पूछती रहती हैं कुछ मेरी निगाहें
घाटियों की गोद में क्या-क्या छुपा है
पर्वतों की चोटियों ने क्या है देखा
सृष्टि के आरम्भ से क्या हो रहा है
कितने इतिहासों को बोलो तुमने देखा
बूढ़े पेड़ों को जो छूकर हवा आती सरसराती
कौन सी गाथायें है मन में छिपाये
गोद में घाटी की बहती नदी आती गुनगुनाती
कौन सा संगीत हरदम वो सुनाये
इनके सन्नाटों में इक सूर गूँजता है
सृष्टि का कण-कण प्रकृति को पूजता है
अंक में भर लूँ ये सुन्दरता बिछा कर अपनी बाँहें
भर लूँ आँखों में ये कुदरत ये नज़ारे प्यारी राहें
दूर तक फैली हुई इन घाटियों में
ढूँढती रहती हैं कुछ मेरी निगाहें

❖

यादों के जंगल में

यादों के जंगल में
कितने मिले
कितने खो गए
कुछ से हम अलग हुए
कुछ हमसे जुदा हो गए
कुछ सपनों में आते हैं
कुछ सपनों की तरह खो गए
कुछ के खोने के बाद
हमारे सारे सपने सो गए
यादों के जंगल में
जब-जब रात आती है
जाने किस-किस की
कहाँ-कहाँ की
कैसी-कैसी यादों की
बारात आती है
यादों के जंगल में भटक रही हूँ
पग-पग पर काँटों में
झाड़ में झंखाड़ में अटक रही हूँ
कौन सी यादों के झाड़ को
उखाड़ कर फेंक दूँ
कौन से काँटों को तोड़ दूँ
कैसे इन यादों को
यादों से झाड़ कर
जीवन की गति को
एक नया मोड़ दूँ
जब भी मैं
यादों के जंगल में

चिराग़ जलाना चाहती हूँ
इस अँधियारे जंगल का
अँधेरा मिटाना चाहती हूँ
न जाने कैसे
उसी चिराग़ से आग लग जाती है
और मेरी यादों का जंगल
धुँआ-धुँआ हो जाता है
धुँए के बादलों के बीच
मैं फिर से भटकने लगती हूँ
यादों के जंगल में ढूँढने लगती हूँ
अपने को पराये को
खुद अपने साये को
हृदय में मस्तिष्क में उगते जाते हैं
यादों के नित नये जंगल
हम उलझते जाते हैं यादों के जंगल में

❖

पृथ्वी पर स्वर्ग बना दो

ताक़त अगर है तुममें तो कुछ करके दिखा दो
तुम एक बार आदमी को आदमी तो बना दो
यूँ तो तुमने बहुत से आविष्कार किये हैं
ढेरों सपने तुमने साकार किए हैं
प्रकृति प्रदत्त जंगलों की जगह
लोहे और कंक्रीट के जंगल
धनिकों के भवनों में विलासिता के दंगल
लालच और स्वार्थ ने दबा दिया प्रेम प्यार
सबकी आँखें ढूँढती रहती हैं कमज़ोर शिकार
कहाँ गये निर्मल आनन्द के क्षण
गीत संगीत भक्ति कीर्तन
शान्ति से बैठ कर चिन्तन और आत्ममंथन
सभी एक दूसरे से आज क्यों डर रहे हैं
सबकी आँखों में अजीब सा भय
सब घुट-घुट कर क्यों मर रहे हैं
अपनी बुद्धि का रुख बदल दो
स्वार्थ और घृणा को समय रहते कुचल दो
भय के बदले प्रेम का अमृत तुम चखा दो
तुम फिर से पृथ्वी पर इक स्वर्ग बना दो
ताक़त अगर है तुममें तो आदमी को आदमी बना दो।

❖

राज़ दिल के

लबों की तल्ख़ियों ने खोल डाले भेद दिल के
कुछ जो आँखों से बहे अरमान दिल के
हम बहुत पछताये पर रुकने न पाये
आँसुओं ने भेद दिल के सब बताये
कितनी शिद्दत से उन्हें रोका किये हम
कितनी मुद्दत से उन्हें टोका किये हम
पर न जाने एक पल में क्या हुआ सब
आँख और लब साथ ही दुश्मन हुए सब
चेहरा तो आईना दिल का बना है
जोश तो क्या होश भी अब तो फना है
खुल गए सब राज़ जो दिल में छुपाये
हाय अपने ज़ख्म हम खुद सी न पाये
क्या करें जब काम ही अपने न आयें
तब बताओ हाले दिल किसको सुनायें
कोई कोशिश भर न पाई छेद दिल के
लबों की तल्ख़ियों ने खोल डाले भेद दिल के
भेद जो कुछ दिन रहे मेहमान दिल के
अश्क बन आँखों से बह निकले
मेरे सब राज़ दिल के।

❖

क्या खोया पाया

जीवन में क्या खोया पाया
जीवन का हर दिवस साथ में
सूनी पतझर लेकर आया
मृगतृष्णा और मृगमरीचिका
अतृप्ति का सागर गहरा
हरियाली का नाम नहीं है
जीवन भूखा प्यासा सहरा
भावनाओं के त्वरित वेग से
टूट रही अन्तर की भाषा
जीवन मरण एक से लगते
झूठी लगती हर परिभाषा
रुदन बन गया गीत वही जो
सुख के लिए कभी था गाया
जीवन में क्या खोया पाया

अँधियारों में लुप्त हो गए
वे जो कभी थे मेरे अपने
निद्रा तक भी साथ ले गए
कैसे देखूँ उनके सपने
पर कृतज्ञ हूँ उनकी फिर भी
यादों के जो दिये सहारे
उन यादों के सम्बल से ही
मन में आतीं कभी बहारें
आशा और निराशाओं की
जीवन में यह कैसी माया
जीवन में क्या खोया पाया।

❖

अपनत्व का तार

कभी-कभी सोचती हूँ
मेरे तुम्हारे बीच ये रिश्ता
कब, क्यों और कैसे जुड़ गया
क्यों मेरा हृदय
जो कभी तुम्हारे साथ
एक अपनत्व
या विचार साम्यता
नहीं बना पाया था
कौन से अद्‌भुत क्षणों में
तुम्हारी ओर मुड़ गया
शायद ये वही दर्द भरे क्षण थे
जब मैं और तुम
एक जैसे हालातों से गुज़र रहे थे
जब दर्द भरी हवाओं के झोंके
हम दोनों को थपेड़े लगा रहे थे
और दुःखों की लहरें
हमें अपने साथ बहा ले जाने को
उद्यत थीं
तभी हम दोनों ने जाना
कि इतने विपरीत होते हुए भी
हम दोनों
कहीं एक दूसरे जुड़े हुए थे
हाँ –
यह वही दर्द का रिश्ता था
जिसने हमें एक दूसरे की
पहचान कराई
और एक अपनत्व का तार
हमारे बीच जुड़ गया।

❖

आराध्य

जब कभी अपने हृदय के घाव
मैं तुमको दिखाना चाहती हूँ
जब कभी अपनी कहानी
तुमको ऐ बन्धु
सुनाना चाहती हूँ
जब कभी
अपने उमड़ते प्रेम का
प्रतिदान पाना चाहती हूँ
जब कभी
बीते दिनों की
याद के दीपक जलाना चाहती हूँ
जब कभी
अपने तुम्हारे बीच आई
अनदिखी
दीवारें गिराना चाहती हूँ
तब न जाने कौन
आ जाता हमारे बीच में
शायद तुम्हारा अहम्
या दुर्भाग्य मेरा
तुम न चाहे दो मुझे
प्रतिदान मेरे स्नेह का
मैंने तुम्हें माना सदा
आराध्य मेरा।

❖

छोटा सा हठ

मन के किसी कोने में
एक छोटी सी ज़िद है
कर दूँ कभी
सम्भव —
असम्भव को
एक छोटा सा हठ है
कुछ ऐसे काम कर दूँ
जिन्हें करने से
नई भावना
नई चाहना
नई प्रेरणा का उद्‌भव हो
रचना करूँ
एक ऐसे अनहद नाद की
जिसे सुन कर सारी सृष्टि
तेरा-मेरा, इसका-उसका
धर्म-जाति
राजनीति, कूटनीति को भूल
एक प्रेम भाव में तन्मय हो जाये
सृजन करूँ ऐसे साहित्य का
जो मानवता का संदेश दे
वसुधैव कुटुम्बकम् का
जो कल्याणपूर्ण, आनन्दपूर्ण
स्नेहपूर्ण हो
जिसमें भाव हो
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् का
जिसे पढ़ कर सारा संसार चिन्मय हो
और मैं कर दूँ सम्भव असम्भव को।

❖

दिव्य ज्ञान

जनता का राज
जनता के लिए
जनता के द्वारा
उनको लगा यह नारा
बड़ा ही प्यारा
आजकल ये तीनों काम
वे खुद के लिये करते हैं
वह खुद भी तो जनता हैं
यह बोध उन्हें प्राप्त हो गया है
हर आदमी गद्दी पर आये
खाये, कमाए और जाये
तो एक दिन सभी अमीर हो जायेंगे
यह दिव्य ज्ञान
उनके अन्तर में
व्याप्त हो गया है
इसीलिए अन्तर से
आत्मा-परमात्मा
सबका भय
समाप्त हो गया है।

❖

हसरतें

मैंने इस दिल में
हसरतों के कितने ख़ज़ाने बनाये थे
मन को बहलाने के लिये
कितने बहाने बनाये थे
कभी चाँद तारों तक जाने की हसरत
तो कभी समन्दर की लहरों में
कूद जाने की
दूर-दूर तक अतल गहराइयों में
घूम आने की हसरत
कभी संगीत की सरगम में
डूब जाने की हसरत
कभी नृत्य में झूम जाने की हसरत
कभी काव्य रस में
भीग जाने की हसरत
कभी गल्प में डूब जाने की हसरत
कभी दूर पर्वत पे जाने की हसरत
कभी जंगलों में छुप जाने की हसरत
परायों को अपना बनाने की हसरत
किसी प्यार में डूब जाने की हसरत
मैं अपनी हसरतों के हुजूम में
खो कर रह गई
मेरी हसरतें न जाने
कौन से समन्दर में बह गई
काश
मैंने हसरतों के ये खज़ाने न बनाये होते
तो आज –
उनकी याद में
इतने आँसू न बहाये होते। ❖

सुनहरी सहर

कितना तन्हा है ज़िंदगी का सफर
कब मिलेगी मुझे सुनहरी सहर
ज़िंदगी आग का है इक दरिया
तैर कर इससे हमको जाना है
दिल में जलती लपट छिपाए हुए
हँसना रोने का इक बहाना है
चैन दिल को नहीं है आठों पहर
कब मिलेगी मुझे सुनहरी सहर

ख़ार हर इक कदम पे चुभते रहे
दीए उम्मीद के भी बुझते रहे
कहने को लाख शिक़वे थे फिर भी
सिर्फ दुनिया की बात सुनते रहे
कब तलक पीएँ ज़िंदगी का ज़हर
कब मिलेगी मुझे सुनहरी सहर

आस टूटे तो कोई कैसे जिए
अपने छूटें तो आँसू कैसे पिए
चाक दामन लिए लिए फिरते
कैसे दिन ए खुदा हैं मुझको दिए
कितने दिन और सहना है ये क़हर
कब मिलेगी मुझे सुनहरी सहर।

❖

गंगा

लहर-लहर लहराती गंगा
छहर-छहर छहराती गंगा
फहर-फहर फहराती गंगा
हहर-हहर हहराती गंगा
नागिन सी बलखाती गंगा
दुल्हन सी इठलाती गंगा
हाहाकार मचाती गंगा
शान्ति दूत सी बहती गंगा
चण्डी रूप दिखाती गंगा
माँ की गोदी जैसी गंगा
अन्तर को सहलाती गंगा
कभी-कभी दहलाती गंगा
सूरज चाँद सितारे लेकर
झिलमिल स्वर्ण बिखेरे गंगा
शीतल जल की थपकी देकर
तन-मन पावन करती गंगा
विस्तृत सागर जैसी गंगा
कहीं पीन सी बहती गंगा
युग-युग से सब देख रही है
इतिहासों को सहती गंगा।

❖

कहाँ से हैं मसीहा आते

कैसे-कैसे कभी हालात बदल जाते हैं।
देखते-देखते दिन रात बदल जाते हैं।
कभी वीरानियों में भी जीने का हम जोश करें
कभी सन्नाटों में भी रहने का हम होश करें।
कभी हम भीड़ में अपने को अकेला पाते।
कभी अपनों में भी अपना न कोई चेहरा पाते।
कभी आता है तसव्वुर में, कि सभी हैं अपने।
कभी इक झटके में टूटे सारे सपने।
कभी लगता है कि ज़िंदगी नियामत है।
कभी लगता है कि जीना तो इक क़यामत है।
कभी लगता है कि आदर्श सभी झूठे हैं।
कभी पग-पग वे इन्हीं से हम टूटे हैं।
कभी जाने फिर कहाँ से हैं मसीहा आते।
टूटे विश्वास जोड़ जाते हैं।
फिर अचानक एक बार फिर से,
मेरे जज़्बात बदल जाते हैं
कैसे-कैसे कभी हालात बदल जाते हैं।
देखते-देखते दिन रात बदल जाते हैं।

❖

भाषा और परिभाषा

नहीं जानती मैं सुख की परिभाषा
यदि बतला दो उपकार तुम्हारा होगा
जीवन के सूनेपन में जब मंगलदीप जलाये
नन्हीं सी ज्योति बुझाने बहु पवन झकोरे आये
अँधियारे भाग्य गगन में जब सुख चंदा मुसकाया
उजियारे दीप बुझाने कारे बदरा घिर आये
आदर्शों के शुभ पथ पर जब-जब भी पाँव बढ़ाये
बढ़ नहीं सकी इक पग भी बिन ठोकर पग-पग खाये
चाहा फूलों के संग में काँटों को भी अपनाऊँ
पर जीवन के मोड़ों पर काँटे ही काँटे पाये
जीवन क्या एक खिलौना है उस अदृश्य विधना का
समझाये मुझको कोई, कोई रहस्य बतलाये
नहीं जानती मैं जीवन की भाषा
यदि सिखला दो उपकार तुम्हारा होगा
नहीं जानती मैं सुख की परिभाषा
यदि बतला दो उपकार तुम्हारा होगा।

❖

भावहीन पीड़ा

विस्मृति के जंगल में खोई सी
भावहीन पीड़ा में खोई सी
अन्तर में स्नेहहीन दीपक की
बाती सी जलती हूँ
रेती सा शुष्क रहा तन-मन
यह यौवन भी
टूट रहा दग्ध हृदय
अन्तर का कण-कण भी
फिर भी क्यों
किस सुख की आशा में
अर्न्तमन छलती हूँ
क्या खोया
क्या पाया
यह तो क्या कहना है
भाग्य में लिखा है जो
वह सब तो सहना है
कहने और सहने की
सीमा को तकती मैं
मोम सी गलती हूँ।

❖

गुरु-चेला

गुरु रहे गुड़
चेले बने शक्कर
बुद्धि के मैदान में
दोनों की टक्कर
गुरु ने चाटीं पुस्तकें
चेले न पढ़े अच्छर
चेले बने शेर
गुरु रहे मच्छर
गुरु रहे नम्र
चेले बने अक्खड़
चेले बने धनपति
गुरु रहे फक्कड़
चेले बने महल
गुरु नींव के पत्थर
गुरु और चेले का
कैसा यह चक्कर।

❖

एक नन्ही सी परी

दूर बहुत दूर चाँद तारों से
एक नन्हीं सी किरण
मेरे घर में उतर के आई है
जिसके आने से घर के कोनों में
चाँदनी सी बिखर के छाई है
एक नन्ही सी कली मेरे उपवन में मुस्कुराई है
जिसके आने से मेरे घर में बहार आई है
एक खुशबू से भरी मंद पवन हर तरफ लहराई है
जिसके चलने से लगे महकती पुरवाई है
एक नन्हे से खिलौने की शक्ल लेकर जैसे
आसमानों से परी एक उतर आई है
मेरे जीवन की शाख़-शाख़ पर जैसे
एक बासंती बयार छाई है
उसके रोने ने मुझे एक नई
संगीत ध्वनि सुनाई है
उसके हँसने ने मुझे
सारी सृष्टि हँसती हुई दिखाई है
उसके आने से स्वप्न सत्य हुए
एक सतरंगी छटा सी छाई है
उसके चेहरे की हर एक रेखा में
जैसे मेरे ज़िंदगी समाई है
मेरे जीवन के ठहरे पानी में
मीठी तरंग बन के आई है
मेरे मन प्राण रीते प्यासे थे
ये अनूठी उमंग बन के आई है
मेरे घर में एक नन्हीं सी परी आई है।

❖

उजली सहर

पहुँच जाना मंज़िले मक़सूद पर
रास्ते की मुश्किलों से
तुम न डर जाना कभी
काम जो करने हों कर लेना सभी
दुश्मनों की ठोकरों से
तुम न घबराना कभी
बहुत से अपने मिलेंगे राह में
बदल देंगे जो तुम्हारी
हर खुशी को आह में
तुम न अपनी राह से हटना तनिक
न कमी आये तुम्हारी चाह में
ज़िंदगी में कुछ मिलेंगे हमसफ़र
ढायेंगे तुम पर जो छुप-छुप कर क़हर
पर न सहना तुम किसी अन्याय को
मंज़िलें मिलतीं हमेशा न्याय को
प्यार से तुम जीत लेना हर बशर
एक दिन आयेगी इक उजली सहर
सामने मंज़िल भी आयेगी नज़र।

❖

हाथों से छूटते दामन

कहाँ पहुँचा दिया हमें ज़माने के बदलाव ने
रिश्तों में आग लगी हर दिल में घाव है
बढ़ रही हैं सम्बन्धों में दूरियाँ जुड़े परिवार टूट रहे हैं
कच्ची हो रही हैं सम्बन्धों की डोरियाँ
हाथों से अपनों के दामन छूट रहे हैं
एकल परिवार का रिवाज़ बढ़ रहा है
कितनी तेज़ी से समाज बदल रहा है
घर में बुजुर्गों के लिये स्थान का अभाव है,
पश्चिमी सभ्यता का कैसा विषैला प्रभाव है

चाचा, ताऊ, बुआ, मौसी, मामा जैसे रिश्ते
शायद पुस्तकों में ही रह जायेंगे
दादा-दादी वृद्धाश्रम के किसी कमरे में मिल जायेंगे
नई पीढ़ी के बच्चे रिश्तों का अर्थ कैसे समझ पायेंगे
क्या वे सिर्फ अपने स्वार्थ के लिये जिये जायेंगे
रक्त का सम्बन्ध ममत्व स्नेह जैसे शब्द
अर्थहीन होकर शब्द कोष से मिट जायेंगे
रिश्ते सिर्फ हम और हमारे बच्चों में सिमट जायेंगे

परिवार से समाज, देश और वसुधा तक जाने वाला प्यार
स्वयं में सिमट कर रह जायेगा
कुटुम्ब का अर्थ न समझने वाले
वसुधैव कुटुम्बकम् का अर्थ कैसे समझेंगे
काश वक्त रहते हम सम्भल जायें
पारम्परिक मूल्यों का ह्रास न होने दें
आदर, प्रेम, प्यार के रिश्तों को
थोथी आधुनिकता का ग्रास न होने दें।

❖

एक आज

जो कल बीत गया
वह सिर्फ एक सपना बन गया
कल जो आयेगा
जिसे कभी देखा नहीं
वह कैसे अपना बन गया
मेरे साथी
तुम्हारा अपना
तुम्हारा सपना
सिर्फ तुम्हारा आज है
जी भर कर जिया हुआ आज
खुशी और संतोष से जिया हुआ आज
यह सुख से जिया हुआ आज ही
एक सुख से जिया कल बनेगा
एक खुशी का सपना बन कर याद आयेगा
तुम्हारे आज को महकायेगा
आशा और विश्वास से जिया आज ही
हमारे आने वाले कल को
आशा और विश्वास की ज्योति देगा
हमारे जीवन के
कल आज और कल
आयेंगे और जायेंगे
हम रोज़ एक आज को
जीते चले जायेंगे।

❖

ऐ वतन

ऐ वतन हम तेरे तू हमारा सदा
दिल को छू लेती है तेरी हर इक अदा
तेरी नदियाँ पहाड़ तेरे झरने तलाब
गंगा जमना तेरी, तेरी झेलम चनाब
तेरे तीनों तरफ फैला सागर का जल
तेरा आकाश कितना है निर्मल विमल
तेरे अम्बर की आशीष हम पर रहे
सूर्य, चंदा, सितारों की होवे कृपा।।

नीला सागर है नीला असीमित गगन
लाल स्वर्णिम जले जिनमें सूरज किरण
तेरी धरती पे हरियाली सब ओर है
खेत खलिहान हैं आम पर बौर हैं
तेरे भंडार खाली न होवे कभी
तेरा दामन भरें ईश, यीशू खुदा।।

जो भी रहते यहाँ वे सभी भाई हैं
सिक्ख हिन्दू या मुस्लिम या ईसाई हैं
है अचम्भित तेरी बात से सब जहाँ
कैसे मिल कर के रहते धर्म सब यहाँ
धर्म और जाति से फर्क पड़ता नहीं
खून का रंग है लाल सबका सदा।।

तेरे पशु-पक्षी, मानव अनोखे सभी
भावना प्रेम की कम न होती कभी
हिन्द सागर पखारे है तेरे चरण
तुझ पे बरसाते हैं देवता भी सुमन
है मुकुट सा हिमालय तेरे शीश पर
तेरा ध्वज ऊँचा फहराये उस पर सदा।।
ऐ वतन हम तेरे तू हमारा सदा
दिल को छू लेती है तेरी हर इक अदा। ❖

जीवन का उल्लास

समय के बढ़ते सूरज के साथ
मैं भी बढ़ रहा हूँ
मेरे नए बढ़ते पंखों के लिए
पुराना आकाश छोटा पड़ रहा है
मुझे एक नया विस्तृत आकाश चाहिए
मैं बन्धनों से स्वतन्त्र होकर
अपनी उड़ान भरना चाहता हूँ
मैं स्वर्णिम पिंजरे से दूर
वास्तविकता और प्रकृति से
तादात्म्य स्थापित करना चाहता हूँ
मुझे आत्म सम्मान से जीने के लिए
एक सहज विश्वास चाहिए
मैं अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए
मार्ग की बाधाओं को विजित कर
अस्वस्थ मानसिकता
और पैरों में पड़ी ज़ंग लगी ज़ंजीरों को तोड़कर
आगे बढ़ना चाहता हूँ
मुझे अन्धकार से मुक्त करके
दिव्य ज्योति की ओर
ले जाने वाला प्रकाश चाहिये
मैं निराशा के गर्त से निकल कर
आशा का दीप जलाना चाहता हूँ
कण्टकाकीर्ण पगडण्डियों से निकल कर
स्वच्छन्द और समतल मार्ग पर आना चाहता हूँ
मुझे अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिये
जीवन का उल्लास चाहिये।

❖

मत गाओ

कुछ गीतों को मत गाओ
कुछ लम्हों को भूल जाओ
जिन गीतों को गाने से
मन विचलित सा हो जाता है
कुछ क्षण जो याद आ जायें अगर
मन शंकित सा हो जाता है
जिन अपनों की यादों से
काँटे से मन में गड़ते हैं
जिन काँटों की नोकों से हम
हँसते-हँसते रो पड़ते हैं
जो लम्हें हम पर हँसते हैं
पल-पल जो मन को डसते हैं
उन लम्हों को भूल जाओ
कुछ गीतों को मत गाओ

हम तो एकाकी रहते हैं
हम संग हवा के बहते हैं
दुख दर्द सभी हम सहते हैं
पर उनसे कुछ न कहते हैं
जब मन सूना सा लगता है
दुख भी दूना सा लगता है
दुख को अन्दर पी लेते हैं
यूँ हँस-हँस कर जी लेते हैं
इससे पहले वो हम पे हँसें
हम ही खुद पर हँस लेते हैं
मन रोता है तो रोने दो
तुम तो होठों से मुस्कुराओ
कुछ गीतों को मत गाओ
कुछ लम्हों को भूल जाओ।

अहसासों का अहसास

काश कभी खुद से मुलाकात कर लेते
काश कभी खुद से ख़ुद की बात कर लेते
बहुत दिनों से हुई न थीं किसी अपने से बातें
तो सोचा चलो आज कर लेते हैं अपने से बातें
पर यह क्या – अपने से तो अपनी पहचान ही नहीं है
खुद को पहचानना आसान भी नहीं है
लगा हम तो हैं ही नहीं अपने
जो दिन अब तक जिये क्या वो थे सपने
वक्त निकल गया हाथों से
हम रहे अनजान अपने दिल की बातों से
अपनों की उलझनें सुलझाने में
अपनी उलझने जान ही न पाये
आज ये बालों के गुच्छे सी उलझी उलझनें
कैसे सुलझायें
जितना सोचते हैं उतना उलझ रहे हैं
आज पहली बार
मेरे जज़्बात बिलख रहे हैं
काश एक बार बीते दिन वापिस आ जाते
तो हम भी एक बार अपना साथ कर लेते
एक बार ख़ुद से ख़ुद की बात कर लेते
एक बार ख़ुद से मुलाकात कर लेते
एक बार अपने अहसासों का अहसास कर लेते।

❖

आदमी तो सब जगह हैं

मेरे दोस्त –
मेरे बन्धु एक ज़िंदगी के लिए
सिर्फ आदमी होना काफी नहीं है
आदमी तो सब जगह हैं
सब जी भी रहे हैं
अपने-अपने ढंग से
विष और अमृत
पिला भी रहे हैं
पी भी रहे हैं
लेकिन समाज में व्याप्त
कुण्ठा, ईर्ष्या, तनाव
अवांछित तत्वों से लगाव
अत्याचार, अनाचार, भ्रष्टाचार
अपहरण, उत्कोच, बलात्कार
ये सब इस ओर इंगित करते हैं
कि आदमी ही आदमी का शत्रु है
इस शत्रुता को दूर करने के लिए
समाज को विनाश से बचाने के लिए
आदमी को
आदमी होने के साथ
इन्सान होना भी ज़रूरी है।

❖

फूल खिलते हैं

फूल खिलते हैं खिलखिलाते हैं
भौरों के संग गुनगुनाते हैं
प्यारी छोटी सी ज़िंदगी में भी
भीनी सी यादें छोड़ जाते हैं
झूमते डाल पर महकते हैं
भौंरे भी सूँघ कर बहकते हैं
कोई कर दे जुदा जो डाली से
फिर भी जा उसके घर में सजते हैं
टूट कर भी जो सबको दें खुशियाँ
ऐसे कितने भला हैं दुनिया में
काँटों में रह के भी जो खिलता है
ऐसा बस है गुलाब दुनिया में
वन में उपवन में खिलते जाते हैं
कीचड़ में कमल मुस्कुराते हैं
ऐसे ही इस जगत में लोगों को
फूलों से सीखना बहुत कुछ है
अच्छा-बुरा वक्त हो या सुख-दुख हो
हिम्मत से काम लेना ही उचित है
हिम्मत वाले ही लक्ष्य पाते हैं
फूलों से सबके मन को भाते हैं
फूल खिलते हैं खिलखिलाते हैं
भौंरों के संग गुनगुनाते हैं।

❖

अहं की लड़ाई

भुलाना भी चाहें
भुला भी न पाये
बुलाना भी चाहें
बुला भी न पाये
अनोखे मिले हमसफ़र ज़िंदगी के
सफर में सहारे वो दे भी न पाये
अनोखी बड़ी ज़िंदगी की अदा है
रहे पास जो दूर रहता सदा है
वो पल-पल के ताने गिले और शिक़वे
अहं की लड़ाई बे मतलब की बहसें
न समझा सके हम
समझ भी न पाये
कुछ अपने रहे जो सदा ग़ैर बन के
अनोखे मिले हमसफ़र ज़िंदगी के
सफ़र में सहारे वो दे भी न पाये
बहुत से जो अरमाँ दबाये हुये हैं
बहुत राज़ दिल में छुपाये हुए हैं
जो होठों तक आकर निकल भी न पाये
जिन्हें कह सके न और सह भी न पाये
कुछ आँसू जो पलकों में ही रहते अटके
अनोखे मिले हमसफ़र ज़िंदगी के
सफ़र में सहारे जो दे भी न पाये।

❖

अतीत के चेहरे

अतीत के अँधेरों में
अँधे हाथों से टटोलते हुए
अँधेरे कमरों के
बंद दरवाज़े खोलते हुए
अतीत की गहराईयों से
बहुत कुछ खींच लाती हूँ
कभी कुछ मुस्कुराहटें
कभी कुछ कराहटें
कभी कुछ पहचानी सी आहटें
अपने लिये ले आती हूँ
कभी कुछ धुँधले से चेहरे
नज़र के आगे आते हैं
परछाइयाँ बन कर नाचते हैं
हँसते मुस्कुराते खिलखिलाते चेहरे
दर्द और ग़म से बिलबिलाते चेहरे
माथे पर बल लिए चेहरे
आँखों में छल लिए चेहरे
व्यंग की गर्द लिए चेहरे
निगाहें सर्द लिए चेहरे
अपने पराये दूर पार के
आँखों में भाव भरे जीत के हार के
किससे रूठूँ किसको मनाऊँ
अतीत के अँधेरों में क्या-क्या ढूँढ लाऊँ
क्यों ज़ख्म देते हैं जब-तब ये गहरे
अतीत के अँधेरों से झाँकते ये चेहरे।

❖

टूटते स्वप्न

मेरे मन के अन्दर बसा था
एक नया संसार
सपनों में मैंने देखे थे
सुनहले दिन
रूपहली रातें
भरे स्नेह से
मित्र बन्धु सब
और स्नेह की मीठी बातें
चारों ओर बिखरी हरियाली
भीतर बाहर सब खुशहाली
बाँट रहे थे सब आपस में
सुख-दुःख के क्षण
नहीं कोई भी उन्मद, उन्मन
मेरे अनत असीम गगन में
झूम रहा था चाँद
साथ थी तारों की बारात
किन्तु —
स्वप्न से बाहर आकर
पाये मैंने
अनगिन आघात
जीवन में आये
क्षण-क्षण व्याघात
रैन दिवस सब थे बेरंग
भीड़ सब तरफ
पर कोई न संग
नफरत, लोभ, स्वार्थ के दानव
लगा रहे थे घातें

छल छिद्रों से भरी हुई थीं
मीठी-मीठी बातें
टूट गया भ्रम सुख स्वप्नों का
टूट गया मन के अन्दर का
स्वप्नों का संसार
मेरे सपनों का संसार
जो मेरी रग-रग में रचा था
मेरे मन के बीच बसा था।

❖

थोड़ा सा प्रकाश

आओ
ज़िंदगी के अँधेरे मिटाने के लिए
कहीं से
थोड़ा सा प्रकाश ले आयें
ज़िंदगी में छाई कुहास को मिटाने के लिए
कहीं से
थोड़ी सी उजास ले आयें
बहुत रह लिये अपने बनाये अँधेरों में
बहुत जी लिये
बेवफाई और वफा के घेरों में
अब आओ
मेरे पास आओ
कुछ मेरी सुनो
कुछ अपनी सुनाओ
ज़िंदा रहने के लिये
ज़िंदगी जीना ज़रूरी है
ज़हर से बचने के लिए
ज़हर पीना ज़रूरी है
वक्त के साथ कुछ बिखर जाता है
वक्त के साथ कुछ सँवर जाता है
आओ बची ज़िंदगी को बचाने के लिये
दर्द, ग़म और रुदन से छूट जाने के लिये
कहीं से थोड़ा सा हास ले आयें
आओ
ज़िंदगी के अँधेरे मिटाने के लिए
कहीं से
थोड़ा सा प्रकाश ले आयें।

❖

राम का राज

न लोटा है न थाली है न होली न दीवाली है
न कोई सुनहली सुबह यहाँ हर रात यहाँ पर काली है
न सच्चा कोई काम यहाँ हर काम यहाँ पर जाली है
कैसे फूलेगा यह उपवन जब फूल चुराता माली है
जो गद्दी पर जा बैठा है वो चाल चले मतवाली है
जो झुग्गी में जी लेता है उसके घर में बदहाली है
जो जीता है सच्चाई से उसकी तो टूटी डाली है
सब चोर-चोर मौसेरे भाई हम प्याला हम प्याली हैं
ईमान धर्म पर जो चलते उन पर तो तनी दुनाली है
भ्रष्टाचारी ठग भाई की तो होती शान निराली है
रोटी और दाल का टोटा है न सब्ज़ी न तरकारी है
पर वोट हमें देना भाई द्वारे पर खड़े भिखारी हैं
कुर्सी हमें दिला दो भैया किरपा बड़ी तुम्हारी है
मगर नज़र ऊँची मत करना कुर्सी सिर्फ हमारी है
वादे करना फर्ज़ हमारा हम बंदे सरकारी हैं
पूर्ण करेगा ऊपर वाला उसकी जिम्मेदारी है
किसमत में जो तुम्हें मिलेगा गलती नहीं हमारी है
दोष कभी न हमको देना यह सरकारी तुम्हारी है
यह है कैसा गणतंत्र यहाँ हर बन्दा बना सवाली है
आयेगा राम का राज यहाँ यह कैसी ख़ामख़याली है।

❖

बात इतनी थी नहीं

एक बार आ जाओ थोड़ी देर को
कुछ सुनो कुछ तुम सुनाओ आज थोड़ी देर को
क्या पता है वक़्त का
अब है कहीं फिर न मिले
मन में ही रह जायें सारे
मन के शिकवे और गिले
हम हमेशा उलझनों को
और उलझाते रहे
नासमझ बन दूसरे को
अपनी समझाते रहे
फिर अचानक
दूर हम होते गए
अहं के झूठे नशे में
चूर हम होते गए
बात इतनी थी नहीं
जितनी बनी
क्यों हमारे बीच की
डोरी तनी
इससे पहले टूट जायें डोरियाँ
और बढ़ जायें दिलों की दूरियाँ
आओ सुलझा लें दिलों की उलझनें
दोनों कुछ अपनी सुनायें कुछ सुनें
क्या पता है वक़्त का
अब है कहीं फिर न मिले
दूर न हो पायें आपस के
ये शिकवे और गिले
ज़िंदगी को ज़िंदगी भर
चैन का न पल मिले।

हँसी न छीनना

मेरे दोस्त
मैं कोई दार्शनिक नहीं
धर्म प्रचारक नहीं
समाज सुधारक नहीं
मैं हूँ राजनीति, कूटनीति
हर रीति नीति से अनजान
एक सीधा सादा इन्सान
तुमसे अधिक कुछ नहीं चाहता
माँगता हूँ बस एक छोटा सा वायदा
मेरे दोस्त
कभी किसी की हँसी न छीनना
किसी को इतना दुखी न करना
कि वह हँसना भूल जाये
कि वह सुख का सपना भूल जाये
हँसना तो जीवन का मूल है
बिना हँसी का जीवन
चुभता तीखा शूल है
हँसी छीन लेना हत्या से कम नहीं
हत्या इन्सान की ही नहीं
आत्मा की भी होती है
बिना हँसी की ज़िंदगी
आत्मा से हीन
बड़ी बेरंग होती है
आत्मा से हीन मानव मृत समान है
हँसी जीवन के लिये अमृत समान है।

❖

कुछ नए सपने

टूटे बिखरे सपनों के
छितराये टुकड़ों को समेट कर
रख लो सहेज कर
बना लो उनसे कुछ नए सपने
कहो बिछड़ गए थे
मेरे ये अपने
ढूँढ कर इनको
आज ले आया हूँ
करना साकार इन्हें
वादा कर आया हूँ
यह मेरा लालच नहीं
छोटी सी आशा है
शायद मेरी मेहनत
हो जाए फलीभूत
जीवन की बस यह
एक ही अभिलाषा है
बुन लो एक बार फिर
कुछ ऐसे सपने
जिनके पूरा होने पर
बन जायें शत्रु भी
मित्र तुम्हारे अपने।

❖

मेरा कानन

कहाँ खो गया मेरा वह कानन
जिसकी प्राण वायु ने
मेरे प्राणों को
अपनी मलयवात से सींचा
सुगन्धित किया
कहाँ खो गया मेरी वह उपवन
जिसके फूलों के रंग
आज भी मेरी आँखों में
रंग बिखेर रहे हैं
कहाँ खो गई वो अमराईयाँ
जहाँ बैठ कर मैं पढ़ा करती थी
भविष्य के सुन्दर सपने गढ़ा करती थी
जिनके साथ बचपन के
सुनहरे दिन बिताये
सखियों के संग जहाँ
खेले, झूले गाने गाये
वे संगीत लहरियाँ
आज भी मेरे कानों में
अमृत रस भर रही हैं
मेरे क्षण-क्षण के साथी
जिनके ठहाके आज भी
हृदय का मन्थन कर रहे हैं
कहाँ खो गईं वो परछाईयाँ
आज कैसा वक्त आ रहा है
कोई किसी को सह नहीं पा रहा है
शब्दों के बाणों से
एक दूसरे को बेध कर

हर कोई बड़ा होने की कोशिश में
छोटा होता जा रहा है
वो बीते ज़माने की सहनशीलता
स्नेह, सहानुभूति, संवेदनायें
भूलती नहीं कितना ही भुलायें
कहाँ गई वो रिश्तों की गहराईयाँ
जिनके साथ होता था
हर दिन बसन्त और सावन
कहाँ खो गया मेरा वह कानन।

❖

दृष्टि

मीत मेरे
तुम उठा कर दृष्टि न देखो
मगर मैं बहुत कुछ कह जाऊँगी तुमसे
तुम्हारे पास जो रह जायेगी
मेरी ये यादों की धरोहर
फिर कोई लेकर जनम
उसको तो लेने आऊँगी तुमसे
मीत मेरे
मैं चली जाऊँगी तुमसे दूर
क्षितिज के कहीं उस पार
और मेरे साथ मेरा स्वर
मेरी आवाज़ उसकी गूँज भी
खो जायेगी जाकर क्षितिज में
गूँज की अनुगूँज रह कर ही यहाँ पर
तुमसे पूछेगी न जाने प्रश्न कितने
मीत मेरे
कर्ण रन्ध्रों में तुम्हारे
प्रश्न मेरे गूँजते रह जायेंगे
गूँजते हर प्रश्न पर चक्षु तुम्हारे
बस मुझे ही ढूँढते रह जायेंगे
तब उठा कर दृष्टि तुम देखा करोगे
क्षितिज के उस पार
बादलों में नित रचोगे
इक मेरा आकार।

❖

वह निर्झर

खोल दो अपने हृदय के बंद द्वार
बहा दो हृदय में समाहित
वह निर्झर
जिसे तुमने घृणा के आवरण में
छिपा कर रखा है
बिखेर दो अजर-अमर प्यार
अपनी मुट्ठियों में बंद
सतरंगे इन्द्रधनुषी रंग
कृपण की तरह सहेज कर न रखो
रंग दो उन रंगों से
तन और मन सबको
घोल दो प्यार के
सब रंग अपनों में
भर दो सतरंगे रंग
अपनों के सपनों में।

❖

अपने

कैसा अनोखा है जीवन मानव का
जीवन के पग-पग पर
अपने ही निभाते हैं चरित्र दानव का
अपने ही लगाते हैं चिंगारी
जो अंगार बन जाते हैं
अपने ही देते हैं घाव
जो नासूर बन जाते हैं
अपनों का कहा एक वाक्य
महाभारत बन जाता है
अपनों का चलाया एक व्यंग बाण
पीढ़ियों तक चुभता जाता है
अपनों की चलाई तलवार
दुधारी होती है
अपनों के मुँह पर शहद
बगल में छुरी होती है
दूसरों के मारे पत्थर भी
भूल हम जाते हैं
अपनों के मारे फूल भी
शूल बन जाते हैं
जीवन में आग सदा
अपने ही लगाते हैं
पराये तो सिर्फ
हवा देकर प्रज्जवलित करते हैं
या कभी-कभी बुझाते हैं।

❖

रुक न जाना

जीवन की कठिन राहों में
चलते-चलते थक न जाना
काँटों में झाड़ में
कहीं अटक न जाना
राह में कितनी ही बाधायें आयें
नदियाँ, सागर या पहाड़ आ जायें
निर्भय होकर चलते जाना
जीवन में कई नये मोड़ आयेंगे
नए-नए विचार आकर सतायेंगे
किसी मोड़ पर
खड़े न रह जाना
हर मोड़ से
एक नई राह बनाते जाना
अगर किसी मोड़ पर
थक कर रुक गए
तो जीवन भी
वहीं रुक जायेगा
सारे मार्ग अवरुद्ध हो जायेंगे
हवाओं के रुख़
तुम्हारे विरुद्ध हो जायेंगे
तुम्हारा गर्व से उठा शीश
धरती पर झुक जायेगा
और जीवन —
वहीं रुक जायेगा।

❖

कुहास

मैंने तो अँधेरों से
रौशनी की हर किरण को खींच कर
आँखों में भर लेना चाहा
मैंने दुःख के घने बादलों से
जीवनदायी स्वाति की बूँद को
पी लेना चाहा
मैंने हर विश्वासघाती के हृदय में
विश्वास का अंश
ढूँढ लेना चाहा
मैंने निराशाओं के तिमिर में
आशाओं की निर्मल चाँदनी को
ढूँढ लेना चाहा
मैंने हर ज़हरीले व्यंग में से
अमृत रूपी नसीहत को
खोज लेना चाहा
मैंने निन्दकों के समूह को
आस-पास रख कर
अपने हृदय की बुराइयों को दूर कर
कबीर के अनुसार
बिना पानी और साबुन के
स्वभाव को निर्मल करना चाहा
किन्तु मेरे हर सद्प्रयास को
मिला व्यंग और उपहास
और —
मेरा जीवन बन कर रह गया
सिर्फ एक गहन कुहास।

❖

अभागा क्षण

जब-जब रिश्तों की दीवारें,
टकरा कर चकनाचूर हुई।
तुम भी मुझसे कुछ दूर हुये,
मैं भी तुमसे कुछ दूर हुई।
कितने नाज़ुक धागों से ये,
पक्के रिश्ते बन जाते हैं।
विश्वास नाम की नींव लिये,
इक दूजे के हो जाते हैं।
दुनिया के सारे रिश्तों का,
आधार सदा विश्वास रहा।
जिस पल टूटा विश्वास उसी पल,
रिश्ता चकनाचूर हुआ।
ऐसा ही एक अभागा क्षण,
आया हम दोनों के आगे।
इक चक्र चला अनजाना सा,
टूटे मन में बाँधे धागे।
जाने कैसे विश्वास डिगा,
जाने हमसे क्या भूल हुई।
तुम भी मुझसे कुछ दूर हुए,
मैं भी तुमसे कुछ दूर हुई।
कारा बन पायें किसी तरह
रिश्तों की पक्की दीवारें
जिनके साये में पनप सकें
प्यारी सी मीठी मनुहारें।

❖

कितना सहूँ

सुना था
जीवन को उलझनों से दूर रखने के लिए
कुछ खास बातें याद रखो
सोचा किसी विद्वान ने बात कही है
मन में बिठा कर रखो
पहली सीख थी
अतीत अच्छा हो या बुरा
वापिस नहीं आयेगा
अच्छा क्षण याद आकर कहेगा
अब मैं फिर नहीं आऊँगा
मन में एक मीठी सी टीस उठेगी
बुरा क्षण याद आयेगा
सतायेगा, तड़पायेगा
तो मन में चीस उठेगी
इसलिये हम अतीत को भूल गये
दूसरी सीख थी
अदृश्य अनजाने भविष्य के लिये
चिन्ता करना है बेकार
जो होना है वह तो होकर रहेगा
उसे कोई नहीं सकता नकार
तो फिर भविष्य की चिन्ता में
वर्तमान क्यों खराब करें
और हम भविष्य में पूरे करने वाले अरमान
भविष्य के सपने
सबको भूल कर
वर्तमान में जीने लगे
पर अब तो वर्तमान भी डगमगा रहा है

कहाँ जाऊँ, किधर जाऊँ
क्या करूँ, क्या न करूँ
कैसे रहूँ, कैसे कहूँ
कैसे सहूँ और कितना सहूँ
सब सोच कर जीवन लड़खड़ा रहा है
अब तो सोचने को कुछ भी नहीं रह गया
न भूत
न वर्तमान
न भविष्य
जीवन बन कर रह गया
सिर्फ शून्य।

❖

रंगमंच

खत्म होने जा रहा है
रंगमंच पर कठपुतलियों का खेल
शायद कभी न हो सके फिर
इन दर्शकों से मेल
नाटक का पर्दा गिरने में
थोड़ा ही वक़्त बाकी है
कोई आयेगा
कोई जायेगा
हर पुतला अपना रंग दिखायेगा
फिर पर्दा गिरेगा
दृश्य बदलेगा
एक नया अध्याय शुरु होगा
जीवन को एक नया पर्याय मिलेगा
नाचती गाती
विभिन्न भाव-भंगिमायें दर्शाती
जीवित कठपुतलियाँ
एक अदृश्य डोरी को पकड़ कर
एक-एक कर
साँस रोक कर
गिरती रहेंगी
पर्दा गिरता रहेगा
उठता रहेगा
पुराना जीवन खत्म होता रहेगा
नया जीवन शुरु होता रहेगा
दुनिया के मेले का रंगमंच
यूँ ही चहकता रहेगा
हर अभिनेता यहाँ आ-आ कर
यूँ ही बहकता रहेगा।

❖

कितना अकेला

डूबता सूरज
झिलमिलाता सागर
सूरज को साथ ले जाता
सतरंगी चूनर लहराता
गर्व से दमकता क्षितिज
हवाओं के बहकते लहकते झोंके
महकती हवाओं में
चहकती खामोशियाँ
सरसराते पत्तों की
फुसफुसाती सरगोशियाँ
घोंसलों को लौटते चहकते पक्षी
आस-पास टहलते बतियाते लोग
और सागर किनारे
पत्थर पर बैठी
मैं पाषाणी
कभी आस-पास की भीड़
कभी अपने अन्दर की पीड़
कभी अपने अन्तर के सूने नीड़ को
निरपेक्ष दृष्टि से देख रही हूँ
भीड़ में भी इन्सान
कितना अकेला होता है।

❖

शाही मेहमान

मुन्नू बेटा बाहर आओ
आये हैं शाही मेहमान
हाथ जोड़ कर करो नमस्ते
खूब करो इनका सम्मान
खड़े हुए ये हाथ जोड़ कर
जैसे माँग रहे भिक्षा
कैसे बड़े लोग हैं झुकते
सीखो कुछ इनसे शिक्षा
आज आये कल बिछड़ जायेंगे
पाँच साल को ये हमसे
सिर्फ माँगते एक वोट ये
पाँच बरस में हम-तुमसे
तुम खुश हो जाओ इसी बात पर
इन्हें बनाते तुम राजा
इसी झोंपड़ी में तुम रहना
महलों में रहते राजा
छू लो आकर पाँव अतिथि के
और अब तुम लो इनको पहचान
कई वर्ष के बाद मिलेंगे
ये तो हैं शाही मेहमान।

❖

दर्द और मुस्कान

दर्द कौन सा छुपा हुआ
इन मुसकाते होठों के पीछे
छुपे हुये हैं कितने आँसू
इन गहरी आँखों के नीचे
अन्तर की परतों के अन्दर
कितने अरमाँ टूट रहे हैं
गहन हृदय के पीछे छिप कर
कितने छाले फूट रहे हैं
हृदय बनाया गहरा सागर
फिर भी लहरें नहीं समातीं
कभी-कभी दर्दीली लहरें
आँखों में आ लहरा जातीं
कैसा है यह नियम सृष्टि का
रोने पर भी रहे नियंत्रण
अन्तस् में हो रुदन भरा
मुख पर मुसकानों को आमंत्रण
कौन सुने अन्तस् की भाषा
कौन पढ़े मुख की परिभाषा
सब अपने सपनों में खोये
ढूँढ रहे हैं झूठी आशा
अपने-अपने दर्द समेटे
सब यूँ ही जीते जाते हैं
मुख पर झूठी हँसी लपेटे
अन्दर ज़हर पिये जाते हैं।

❖

रूठे जिसके अपने

चाँदनी रातों के,
सुरमई बरसातों के,
बागों के, बहारों के,
चाँद और तारों के,
नदियों के तीरों के,
पनघट के गीतों के,
सपने तो सभी देखते हैं।
पर जिसके सपनों में
आते हैं –
चाँदनी के रूप में बहाये गए
चाँद के आँसू
बादलों में छिप कर आए
बिरहिन के संदेशे
चाँद के चेहरे पर
दुखों के गहरे दाग़
तारों के सीने में
सुलगती आग
नदिया की लहरों में
बहते, डूबते सपने
पनघट के गीतों में
छूटते अपने
वो कैसे जिये
कितना ज़हर पिये
टूटे जिसके सपने
रूठे जिसके अपने।

❖

एक समझौता

शादी
एक ऐसा समझौता
जिसमें दो लोग
साथ रहने की
साथ सहने की
विपरीत धाराओं के सहारे भी
साथ बहने की कसमें खाते हैं
लड़ने की झगड़ने की
मनने की मनाने की
सुनने की सुनाने की
समझने की समझाने की
यथासम्भव कोशिशें करते हैं
यह समझौता विश्वास पर आधारित है
विश्वास की नींव में दरार आते ही
विश्वास टूटते ही
समझौतों का यह सम्बन्ध
काँच की तरह
किरच-किरच बिखर जाता है
कैसी विडम्बना है
इससे नाजुक रिश्ता भी कोई नहीं
इससे पक्का रिश्ता भी कोई नहीं।

❖

मयूरा नाच

नाच मयूरा नाच
मयूरा नाच मयूरा नाच
तुझे कभी भी छू न पाये
इस धरती की आँच
मयूरा नाच मयूरा नाच
किसकी धुन में तू मतवाला
या पी ली है तूने हाला
तेरी मोरनी चुप-चुप रहती
बड़ी चोरनी चुप-चुप रहती
तू उसकी यादों में पागल
वो करती है तुझको घायल
छोड़ ज़रा तू उस पगली को
ऊपर देख छाई बदली को
खोल हज़ारों अपनी आँखें
नाच ज़रा फैला कर पाँखें
आसमान भी बरस रहा है
और धरती को परस रहा है
सबका तन-मन सरस रहा है
कण-कण कैसा हरष रहा है
सबकी आशा कर दे पूरी
रहे न कोई प्यास अधूरी
सृष्टि की हर परिभाषा को
ताल-ताल में बाँच
मयूरा नाच मयूरा नाच।

❖

उसकी ज़िंदगी

वह रोज़ लोगों के घर आती है
कपड़े बर्तन धोती है,
घरों को स्वच्छ करती है
थकी माँदी रात तक घर पहुँचती है
उसका अपना घर गंदा और कपड़े बर्तन फैले पड़े हैं
पति महोदय शराब के नशे में धुत्त पड़े रहते हैं
समय पर खाना नहीं बना पाई
शराब के लिये पैसे नहीं दे पाई
तो निकम्मे पति से मार खाई
बहते घाव नील पड़ा शरीर लेकर
कभी-कभी बुखार से तपता शरीर लेकर
काम के लिये निकल जाती
ज़िंदगी यूँ ही चलती रहती
पर एक नया अध्याय जुड़ा
उसके अपने बेटे भी बात-बात पर
माँ को गाली और मार का उपहार देने लगे
फिर भी वह अपने बच्चों के लिये सकट, अहोई
पति के लिये तीज, वट सावित्री और करवाचौथ
कोई व्रत रखना नहीं भूलती
ज़िंदगी की यह कैसी दिल्लगी है
उसकी यह कैसी ज़िंदगी है।

चलते जाओ अकेले

सुन कर भी आवाज़ तुम्हारी
जब कोई ना आये
देखे कष्ट तुम्हारे फिर भी
कोई न तुम्हें बुलाये
तब जीवन की कठिन डगर पर
निकलो बन्धु अकेले
चलते जाओ अकेले – चलते जाओ अकेले
बोले भी ना तुझसे कोई सभी लें मुख को मोड़
अरे अभागे डरें जो तुझसे तू दे उनको छोड़
अपने मन की बात मान कर पथ पर जाओ अकेले
चलते जाओ अकेले – चलते जाओ अकेले
दुर्गम पथ पर तेरे सारे, अपने छोड़ें साथ
तब तू बढ़ा कदम काँटों पर
करके उन्नत माथ
राह रक्त रंजित हो फिर भी बढ़ते जाओ अकेले
चलते जाओ अकेले – चलते जाओ अकेले
तूफानी अँधियारी रात में
दीप न कोई दिखाये
गहन तिमिर के काले साये
आकर तुझे डरायें
कर के प्रज्वलित अपनी अस्थियाँ
लिख सृष्टि में अपनी प्रशस्तियाँ
चारों ओर ज्योति बिखरा कर
उस प्रकाश का प्रश्रय लेकर
बढ़ते जाओ अकेले
चलते जाओ अकेले – चलते जाओ अकेले

❖

गुरुवर रवीन्द्रनाथ टैगोर के गीत "एकला चलो रे" से प्रेरित

समाज का चेहरा

जी हाँ यह समाज है
अब यह न पूछिये
कि समाज क्या है, कौन है, कहाँ है
क्योंकि समाज का कोई चेहरा नहीं होता
इसीलिये समाज की सोच पर
कोई पहरा भी नहीं होता
समाज किसी को कुछ भी कह सकता है
कुछ करने या कुछ न करने को
मजबूर कर सकता है
किसी के अरमानों को
किसी के सपनों को
चूर-चूर कर सकता है
पर यह समाज है क्या
जिसके डर से इन्सान घर के अन्दर भी डरता है
घर के बाहर और मन के अन्दर भी डरता है
समाज क्या कहेगा
यह सोच-सोच कर मरता है
यह समाज बिना चेहरे के भी
हर इन्सान के चेहरे में छुपा रहता है
एक-एक इन्सान से मिल कर बना यह समाज ही
समाज बन कर एक-एक इन्सान को डसता है
जिस दिन इन्सान का दिल साफ हो जायेगा
उस दिन समाज का चेहरा भी
दर्पण की तरह साफ हो जायेगा।

❖

एक नया मोड़

ज़िंदगी के उस मोड़ पर हम तो अनजाने थे ज़िंदगी से
हम तो बेगाने थे ज़िंदगी से, हम दूर हो गये थे ज़िंदगी से
जैसे जीने की आस टूट रही थी
ज़िंदगी हमसे रूठ रही थी
कि एक दिन अचानक
एक नन्हे बच्चे ने हमें मोड़ दिया
और इस तरह हमें वास्तविक ज़िंदगी से जोड़ दिया
आठ बरस की आयु का वह बच्चा
ढाबे में बर्तन साफ कर रहा था
हँस-हँस कर गाना गा-गा कर अपना काम कर रहा था
शायद हम खाने वालों को भी माफ कर रहा था
उसकी हँसती आँखों की वीरानी में
एक प्रश्न भी था – जैसे पूछ रही थीं –
क्यों साब जी इस समय तो मुझे
स्कूल में होना चाहिए था न
अचानक से मेरे दिल दिमाग में
एक बिजली सी दौड़ गई
जो मुझे अपने अनजानेपन से
बेगानेपन से बेखुदी से मोड़ गई
उस दिन से मेरी ज़िंदगी
एक नई राह पर आ गई
जो मेरे वीराने जीवन में
जीने की चाह जगा गई
आज मैं बस्ती के बच्चों के साथ
अपने नन्हें विद्यार्थियों के साथ
एक जीवन्त जीवन जी रहा हूँ
वीरानियों ने मेरा पीछा छोड़ दिया
एक नन्हे बच्चे ने मेरे जीवन को एक नया मोड़ दे दिया।

सबसे बड़ा सच

कहते हैं ईश्वर की इच्छा बिना
पत्ता भी नहीं हिलता
जो लिखा भाग्य में विधाता ने
वही तो है मिलता
कब क्या होगा
किसी को नहीं पता
किन्तु दुनिया का सबसे बड़ा सच
सिर्फ एक है
दुनिया का यह सच सब जानते हैं
इसके कारण ही सब
ईश्वर को मानते हैं
वह है ज़िंदगी का सच
कैसे ज़िंदगी पल-पल मुड़ जाती है
कैसे ज़िंदगी क्षण में उड़ जाती है
ज़िंदगी हाथों से रेत सी फिसल जाती है
जाने कब अनजाने में
मुख से निकली बात सी निकल जाती है
पल में बिगड़ जाती है
पल में सुधर जाती है
पल में निखर जाती है
पल में बिखर जाती है
ज़िंदगी का अंत ही
ज़िंदगी का सबसे बड़ा सच है
शेष सब झूठ है
ज़िंदगी छीन लेना ही
ज़िंदगी की सबसे बड़ी लूट है।

❖

मिल रहे धरती गगन

देखते क्या नयन मेरे
क्षितिज के उस पार
दिख रहा जैसे लगा है
रंग का अम्बार
झिलमिलाता एक सागर
सामने बिखरा पड़ा
सूर्य जैसे स्वर्ण बन कर
कूद सागर में पड़ा
अनगिनत रंगों से अम्बर
नववधू सा सज रहा
नीलसागर में तरंगों का
मधुर स्वर बज रहा
नीला सागर नीला अम्बर
क्षितिज में यूँ मिल रहे
जैसे युग से बिछुड़े प्रेमी
अब गले हैं मिल रहे
प्रेमिका ने सूर्य की
सतरंग चूनर ओढ़ ली
सूर्य ने लज्जा दिखाई
और निगाहें मोड़ लीं
गोद में सागर की मिलने
सूर्य तो अब चल पड़े
मिल रहे धरती गगन
क्षितिज की सीमा पर खड़े
देखते सब स्नेह से
धरती गगन का प्यार
देखते क्या नयन मेरे
क्षितिज के उस पार।

❖

उनको तो मिटना है

आती हैं, जाती हैं
आकर चट्टानों से सर को टकराती हैं
हर तरंग सागर की टूट-टूट जाती है
लौट फिर जाती है चोट लिये सीने में
ठहर फिर जाती है
उबल कर एक बार
लहर बन जाती है
यूँ सिर पटक कर
लहर मर जाती है
जीवन भर लहरों की
एक ही कहानी है
आग भरी सीने में
ऊपर से पानी है
जितनी ही आग है
उतना उबाल है
लहरों का जीवन तो
उलझा सा जाल है
सागर में रहना है
सागर सा सहना है
जितने तूफान हों अन्तर में उनके
उतनी ऊँचाई से
उनको तो गिरना है
उनको तो झुकना है
उनको तो मिटना है
उनको तो आना है
उनको तो जाना है
आकर चट्टानों से सर को
टकराना है और टूट जाना है।

कुछ दर्द भरे सवाल

मेरे दिल के कोनों में कुछ दर्द से तब उठते हैं
जब मेरे दिल में कुछ दर्द भरे सवाल उठते हैं
ये सवाल न जाने कब दिल के अन्दर आ जाते हैं
चैन नहीं लेने देती दिल को सवालों की चुभन
सवालों के गड़ते काँटे मुझको कर देते हैं उन्मन
प्रश्न शायद किसी के लिये अजीब होते हैं
पर मेरे दिल के बहुत करीब होते हैं
क्यों कोई अमीर कोई गरीब है
लोग कहते हैं यह अपना नसीब है
कहीं ऊँच-नीच का भेदभाव
कहीं धार्मिक सहिष्णुता का अभाव
कहीं सामने वाले की कीमत आँकने का भाव
कहीं अपनों से मिले घाव
दिलों की बढ़ती दूरियाँ परिवारों की टूटती डोरियाँ
देश में जयचंद भी बढ़ रहे हैं
यही काँटे मेरे दिल में गढ़ रहे हैं
अखबार के पन्नों पर, टी.वी. के पर्दे पर
रेडियों की आवाज़ में लोगों की ज़बान में
भयभीत बंद होठों में एक सी ख़बरें हैं
चोरी डकैती या लूटमार की
हत्या, अपहरण या बलात्कार की
इन्सान ही इन्सान का दुश्मन क्यों हो रहा है
क्यों अपनी नैतिकता अपनी परम्परा खो रहा है
क्यों लोग जब-तब अपनों के हाथों ही लुटते हैं
कुछ ऐसे ही दर्द भरे प्रश्न मेरे दिल में उठते हैं
जब-जब इन सवालों से मेरे प्राण घुटते हैं
तब-तब दिल के कोनों में दर्द के गुबार उठते हैं।

❖

आते कैसे-कैसे बादल

आते कैसे-कैसे बादल
प्रेमी को हरषाते बादल
बिरहिन को तरसाते बादल
कभी-कभी डरपाते बादल
कभी-कभी तड़पाते बादल
रिमझिम तान सुनाते बादल
छम-छम नीर बहाते बादल
जगती को सरसाते बादल
अग्नि हृदय छुपाते बादल
आते बरस-बरस ये बादल
बरसें सरस-सरस ये बादल
घन-कानन वन उपवन-उपवन
बरसें हुलस-हुलस ये बादल
माँ धरती की प्यास बुझाने
आते विहँस-विहँस ये बादल
झनन झनन झन घनन-घनन घन
बरसे गरज-गरज ये बादल
हर मन के दर्पण के अन्दर
बदल-बदल कर आते बादल
रंग-रंग के रंग रूप में
आते कैसे-कैसे बादल।

❖

दोहे

साधो मन है बावरा, जहाँ तहाँ मँडराये।
घर-घर झाँकत जाय के, निज मन झाँक न पाये।।

अपना-अपना करत है, अपना होत न कोय।
जो अपना सपना समझ, सपना अपना होय।।

साधो मैंने देख ली दुनिया तो है गोल।
मन दुखियारा रो पड़े देख ढोल में पोल।।

तेरा साईं देखता तेरे सारे काम।
भले काम के मिलेंगे तुझको चोखे दाम।।

तेरी-मेरी जो करे जग उसको ठुकराये।
तेरी-मेरी छोड़ दे जग अपना बन जाये।।

जो तू सबको मान ले अपने मन का मीत।
मन पर तेरी जीत तो जग पर तेरी जीत।।

चढ़ते सूरज को सदा करते सभी सलाम।
जो गिरते को थाम ले बन जाता भगवान।।

❖

देवताओं का ख़ज़ाना

स्वर्ण क्यों बिखरा पड़ा है
आज इस नीले गगन में
देवताओं का ख़ज़ाना
लुट गया क्या?
जगमगाहट भर गई कैसे अचानक
सृष्टि का कण-कण
नये रस रंग में डूबा अचानक
हर तरह के रंग घुल कर
इक सुनहरे घोल में
मिल कर हुए चित्रित
गगन के विस्तृत, असीमित
कैनवास पर यकायक
पर हुआ यह सामने क्या
मेरे सम्मुख फैले
विस्तृत, गहरे नीले सागर में
ये रंग कैसे भर गए
आसमान का चित्रकार
अपने सारे रंग बिरंगे
सुनहरे रंगों को लेकर
आसमान से गहरे सागर में
कूद गया
या उसका
रंगों से भरा घड़ा
उसके हाथों से छूट गया क्या?
और देवताओं का स्वर्णिम ख़ज़ाना
एक बार फिर लुट गया क्या?

❖

खेवन हार

दूर कूल पर खड़ी हुई मैं,
देख रही मँझधार को।
नन्हीं नौका ढूँढ रही है,
अपने खेवनहार को।
चंचल लहरें सागर की आ,
बार-बार टकराती हैं।
पदाघात करतीं क्षण-क्षण पर,
डरपाती ठुकराती हैं।
खड़ी अचंचल किसी आस में,
सहती निठुर, प्रहार को।
नन्ही नौका ढूँढ रही है,
अपने खेवनहार को।
विश्वासों का सम्बल लेकर,
बढ़ी चली जाती पथ पर।
नई उमंगों, नई तरंगों
नव आशाओं के पथ पर।
नहीं रोकती प्रतिबन्धों से,
मानस के उद्‌गार को।
नन्ही नौका ढूँढ रही है,
अपने खेवनहार को।
पा सकती क्या लक्ष्य कभी मैं,
नौका सा विश्वास ले।
मंथन अन्तस् में होता है,
इक नीरव उच्छ्‌वास ले।
शून्य हृदय से ताक रही हूँ,
मैं नदिया की धार को।
नन्ही नौका ढूँढ रही है,
अपने खेवनहार को।

❖

कोठरी काजल की

मित्र अपनी जान का दुश्मन नहीं होता कोई
प्रेम तो इक रोग है
होता अचानक
जान कर इसमें स्वयं ही है नहीं फँसता कोई
ये तो एक दरिया है
जिसमें डूब जाते हैं यकायक
जानते परिणाम होते
भूल ऐसी के भयानक
बुद्धि बल सब भूल जाता
जो बढ़ाता है कदम इस रास्ते पर
फिर नहीं वापस वो आता
किसी भी विनती या डर पर
या खुदा के वास्ते पर
प्रेम की मंज़िल अनोखी
चल पड़ा जो
लौट कर न आ सका वह
प्रेम की राहों का राही
बढ़ चला तो
मुड़ के कुछ न पा सका वह
चाहे दुनिया लाख ताने दे नहीं सुनता कोई
कोठरी काजल की है यह
जान कर इसमें भला
धँसता कोई
मित्र अपनी जान का
दुश्मन भला होता कोई
प्रेम के इस रोग में
खुद ही भला फँसता कोई?

❖

नाराज़गी

मुझे सारी दुनिया से नाराज़गी है
सब इतने ज्ञानी हो गए हैं कि
स्वयं को गीता का कृष्ण समझते हैं
वे सामाजिक और सांसारिक भावनाओं में
नहीं उलझते हैं
अब उन्हें अपने कुरुक्षेत्र में
किसी कृष्ण की जरूरत नहीं
वे अपनी समस्याओं का स्वयं ही
निराकरण करते हैं
वे अपने गणित की जमा-घटा के अनुसार ही
आचरण करते हैं
उन्हें किसी का सुख-दुःख नहीं व्यापता
वे आत्मकेन्द्रित आत्म लीन हैं
उन्हें किसी में
कोई नहीं आस्था
सब बहुत बड़े विद्वान हो गए हैं
अर्थनीति और राजनीति पढ़-पढ़ कर
महान हो गए हैं
राजनीति का प्रयोग वे बाहर ही नहीं
घर में भी करते हैं
अर्थनीति में उनके पैर कभी
चादर में नहीं रहते हैं
कहाँ से और किससे क्या लाभ मिलेगा
अर्जुन की तरह सबकी दृष्टि
एक ही लक्ष्य पर लगी है
इसीलिये मुझे सारी दुनिया से
नाराज़गी है।

❖

नई कहावतें

(1)
उन्होंने बहुत नाम कमाया है
देश सेवा, जन सेवा,
स्वयं सेवा
सभी में दक्ष हैं
दान घर से ही शुरु होता है
यह कहावत
उनके जीवन का लक्ष्य है।

(2)
अँधा बाँटे रेवड़ी
फिर-फिर अपने के दे
यह कहावत उन्होंने
बचपन में पढ़ी थी
नेता बनते ही उन्होंने
अपनी दोनों आँखें निकलवा दीं

(3)
विद्यार्थी ने कहावत लिखी
बहाने बनाना पाप हैं
उन्हें कहावत कुछ गलत लगी
हाथ में पेन लिया
गलती को सही किया
लाल-लाल अक्षरों में
सुधार कर लिख दिया
"बहाने बनाना एक कला है"

❖

भटकते बादल

युग-युग से आँसू बहाते
किसे ढूँढने आते हो
सारे सागरों का जल
आँखों में भर कर
किसकी याद में आँसू बहाते हो
क्या तुम्हारा कोई अपना रूठ गया है
क्या तुम्हारा कोई सपना टूट गया है
कौन है जिसे तुम
विद्युत चमका कर राह दिखाते हो
जिसे नगाड़े बजा-बजा कर
रिझाते हो
कभी इन्द्रधनुष तान कर
कामदेव बन जाते हो
फिर भी वह निर्दयी
तुम्हें क्यों नहीं मिलता
जिसकी खोज में तुम
हर वर्ष आते हो।

❖

अवलम्बन

मैं विचरूँ
उन्मुक्त गगन में
और साथ में हो
तेरी यादों का सम्बल
मैं घूमूँ
गिरि पर्वत कन्दर
घन-वन-उपवन
बहती नदियाँ और समन्दर
चढ़ जाऊँ पर्वत की
ऊँची से ऊँची चोटी पर
साथ रहे यदि तेरी
पुष्ट भुजाओं का अवलम्बन
विजित करूँ मैं
दसों दिशायें
सूर्य चन्द्रमा तारागण
हैं जहाँ तलक
इस सुन्दर सृष्टि की सीमायें
वश में कर लूँ
प्रकृति प्रेमिका का
शुभ तन-मन
मिल जाये यदि तेरा
स्नेहपूर्ण आलिंगन।

❖

दीवाली के दो रूप

है प्रकाश चहुँओर किन्तु क्यों मेरे मन अँधियारा छाया
आई दीपावली सोचती क्या यह पर्व बताने आया
भाँति भाँति के चित्र झलकते मन के चित्र फलक पर आकर
अन्तःचक्षु नहीं सह पाते रुकते अश्रु पलक पर आकर
प्रथम चित्र में एक महल, अति अद्‌भुत ज्योति से छाया है
मानो ले आकाश गंग में, कोई इसे डुबो आया है
कोष्ठ प्रकोष्ठ प्रकाशमान है तम तमिस्त्र का नाम नहीं है
है साम्राज्य नृत्य रंगों का उत्पीड़न का काम नहीं है
अट्‌टहास से काँप रही हैं दीवारें तक रंग महल की
इन्द्र भवन क्या कर पायेगा समता ऐसी चहल-पहल की
मादकता ही मादकता है क्या पीड़ा का काम यहाँ है
सदा प्रफुल्लित दिवस यहाँ के सदा अवध की शाम यहाँ है
खान-पान की रेल-पेल है नाना व्यंजन सजे हुये हैं
इस मंदिर में रहने वाले सारे जग को तजे हुए हैं
कल्पवृक्ष और कामधेनु की एक साथ ही कृपा दृष्टि है
और वरद्‌हस्ता लक्ष्मी ने सदा करी धन की वृष्टि है
और दूसरा चित्र करुण है पीड़ित कर जाता है मन को
उभर-उभर कर झुलसा जाता मेरे इस भावुक तन-मन को
इसी महल के पिछवाड़े पर एक झोंपड़ी दीख रही है
भीषण मौन समेटे दिल में ऐसा लगता चीख रही है
भादों की शत-शत अमाओं ने आकर इसे छिपा डाला है
या काली चादर ने इसको अपने आँचल में पाला है
इसका दिया जलाने वाला, खाली हाथ लौट आया है
चूँ तक करना नहीं जानता, पत्थर होंठ लिये आया है
सिसक रही गृहणी कोने में, नन्हे-मुन्ने पूछ रहे हैं
मेरी खीले और पटाखे रो-रो मुखड़े सूज रहे हैं
चूल्हा तक भी नहीं जला है, फिर दीपों का ही क्या काम
यही झोंपड़ी की दीवाली, यह है दीवाली की शाम।

नवजीवन

मेरे आँसुओं को
मेरी कमज़ोरी न समझना
ये मेरे टूटे दिल के टुकड़े हैं
यह कहने या समझने की
भूल भी न करना
ये आँसू मेरी आँखों से बहने वाली
मोती की लड़ियाँ भी नहीं हैं
ये मेरे अतीत और वर्तमान को
जोड़ने वाली कड़ियाँ भी नहीं हैं
मैंने भुला दिये हैं
बीते दिनों के ग़म
अतीत के दुख दर्द
दिल और आँखों ने फैसला किया है
अब नहीं चाहिये
कोई झूठा हमदर्द
बरसों से दिल में दबा कर रखी
अनजानी ताकत
आज अचानक निकल पड़ी है
आँखों से
आँसुओं के रूप में
आज सारे गिले शिकवे
अतीत के भयंकर सपने
निराशा और परेशानी
सब बन कर खारा पानी
निकल पड़े आँखों की राह
अब नहीं जीवन में तड़पन या आह
ये आँसू मेरी कमज़ोरी के नहीं

मेरी नई ताक़त के प्रतीक हैं
जिनमें सब कछ बहा कर
मैं आज एक
नवजीवन में प्रवेश कर रही हूँ
बहुत अमूल्य है यह जीवन
जिसे अब काटना नहीं
जीना चाहता है मेरा मन
आज मैंने भुला कर अतीत
बरसों के बाद
पा लिया है नवजीवन
अब मुझे नहीं
किसी दुविधा में उलझना
मेरे आँसुओं को
मेरी कमज़ोरी न समझना
पा लिया है मैंने
नवजीवन।

❖

उसने सीख लिया है

उसने अपने दुखों को छिपाना सीख लिया है
उसने आँसुओं को आँखों के अन्दर रोकना सीख लिया है
माँ के घर बात-बात पर
टप-टप टपकने वाली आँखें
कैसे आँसुओं को पीना सीख गईं
कब इतनी समझदार हो गई
उसे खुद भी पता न चला
सब के सामने दिल के अरमानों को
उमड़ते तूफानों को दबाना भी आ गया
दुख का दूर पल उसे कुछ नया सिखा गया
नहीं- वह रोना भूल नहीं सकी
पर अब वह खुद को
खुद से छिपा कर रोती है
वह आँसुओं को बाहर नहीं
अन्दर बहा कर रोती है
रसोई में प्याज काटते समय
या तकिये रज़ाई में मुँह दबा कर
स्नानघर में बहते नल के सामने
या घर के किसी अँधेरे कोने में जाकर
वह अब भी चुपके से रो लेती है
उसने आँखों में आँसू
और होठों पर मुस्कुराहट का अर्थ
सीख लिया है।

❖

स्वर्ण ख़ज़ाना

बिखरा सोना नीलाम्बर में
लिपटी धरती पीताम्बर में
स्वर्णिम माया की छाया में
प्रकृति सुन्दरी झूम रही है
किरण-किरण सूरज की आकर
धरती का मुख चूम रही है
पीपल के पत्तों से देखो
झाँक रहे सूरज के घोड़े
सागर तल तक जा कर पहुँचे
ऐसी गति से सरपट दौड़े
चमक रहा सोना ही सोना
सागर की हर लहर-लहर में
झिलमिल झिलमिल दमके सोना
धरती सागर और अम्बर में
सात रंग की चूनर ओढ़े
धरती झूम रही मदमाती
रंग बिरंगी आँख मिचौली
खेले घूम फिरे इतराती
पात-पात पर फूल-फूल पर
लुटा दिया है स्वर्ण ख़ज़ाना
होली खेली नील गगन ने
धरती गुन-गुन गाती गाना।

❖

सुगन्ध की लहरियाँ

नृत्य कर रही सुगन्ध की लहरियाँ
वन-उपवन में डाल-डाल पुष्प झूल-झूल कर
इंगित कर बुलाने लगे
बैठ कर पवन के घोड़ों पर
मादक सुगन्ध के झोंके झूम-झूम कर
जन-जन को रिझाने लगे
बीते दिन पतझड़ के
विहँस उठी अमराई
सूखे वन-उपवन के पेड़ मुस्कुराने लगे
बदला ऋतुओं का क्रम
बदले दिन और मौसम
भूले सूखे सूने दिन
पात-पात सिहर-सिहर सर-सर सरसराने लगे
छू गई जो बाँसों के झुरमुट को चंचल पवन
मचल कर वो मीठी बाँसुरी बजाने लगे
काल के रथ पर सवार होकर क्रम से
बदलते रहते ऋतुचक्र
कभी कोई जाने लगे
कभी कोई आने लगे।

❖